स्वयंवर

स्वयंवर

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

SWAMVAR (स्वयंवर)
A Play in Maithili Language by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-87675-42-1
दाम: 100/- (भा.रु.)

चारिम संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2013, श्रुति प्रकाशन, दिल्ली)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण चित्र: श्रीमती अपूर्वा सरकार, नोएडा, दिल्ली एनसीआर, 201301
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

समर्पण

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक ढेरपर बैसल

फुलवारी लगौनिहार एवम्

नव विहान अननिहारकेँ

समरपित

पात्र परिचय-

पुरुष पात्र-

1.	मकसुदन-	22 बर्ख।
2.	सोनेलाल-	52 बर्ख।
3.	सिहेश्वर-	55 बर्ख।
4.	रूपलाल-	22 बर्ख।
5.	जीयालाल-	45 बर्ख।
6.	सोहनलाल-	21 बर्ख।
7.	रौदी-	22 बर्ख।
8.	मोहनलाल-	22 बर्ख।
9.	किशोर-	15 बर्ख।

नारी पात्र-

1.	बुधनी-	50 बर्ख।
2.	रूक्मिणी-	42 बर्ख।
3.	सुशीला-	20 बर्ख।

पहिल दृश्य-

(सोनेलालक दलान। बेरुका समए। दलानक ओसारक चौकीपर सोनेलाल बैसल आँखि बन्न केने किछु सोचि रहल छैथ। तैबीच मकसुदनक प्रवेश।)

मकसुदन- काका, छेहा बैसारी भऽ गेल अछि। अहूँ जेना कानमे तूर-तेल दऽ देलिऐ।

सोनेलाल- हौ, कानमे तूर-तेल कहाँ देलिऐ, केना उपकैर-उपकैर लोककेँ कहबै जे हमर काज छह। अनेरे बाबू जन लेब तँ सतरह बापूत अपने छी।

मकसुदन- उपकैर कऽ केकरो नइ कहबै, मुदा काजक उचाढ़ि तँ लगा सकै छी। लोको सभ तेहेन पनिमरू भऽ गेल अछि जे अपनो काज पछुअबैत रहत मुदा समैपर काज नहि करए चाहैए।

सोनेलाल- हौ, लोकेकेँ की दोख देबै, सभटा समैयक किरदानी छी।

मकसुदन- समैयक की किरदानी छी?

सोनेलाल- तेहेन ने जुग-जमाना आबि गेल जे जेहो किछु पुछै छल सेहो अपने मने मतंग रहैए। किछु कहितो संकोच होइए जे कहीं किछु कहबै आ उनटे मुँह दुसए लगए।

मकसुदन- हँ, से तँ बेस कहलौं मुदा थोड़बे काजक चालि आ

मुँहक बोलकेँ बदलैक काज अछि। जखने से करए लगब अनेरे जुग संग चलि औत। जुग संग भेल, जमानाक हाथ पकड़ाएल!

सोनेलाल- कहलह तँ बेस मुदा चालिये ने जिनगी आ बोलीए ने इज्जत छी, जँ सएह उनैट-पुनैट जाएत तखन तँ जिनगीए ने उनैट-पुनैट जाएब भेल?

मकसुदन- हद करै छी अहूँ काका! एतबो नइ सोचै छिऐ जे कोनो वस्त्रक सेखी दिने भरि रहैए, अन्हारमे केकरा के देखैए आ केकर ओहन आँइखे छै जे देखत।

सोनेलाल- हौ, कहलह तँ ठीक, मुदा देखै छी जहिना गाम-घरक लोकक ठेकान नहि छै तहिना तँ राजो-पाटक सएह छइ। केमहर की करब से बुझैयेमे नइ अबैए।

मकसुदन- राज-पाटक की देखै छी?

सोनेलाल- की देखै छी से तूँ नै देखै छहक। हाथमे एटेची नेने ऑफिस पहूँच जा आ पैघ-सँ-पैघ काज हाथक-हाथ करौने चलि आबह। मुदा, जँ से नहि लऽ कऽ जेबह तँ बड़का ऑफिसर्कें के कहए जे छोटको ऑफिसक काज साल-साल भरि लटकले रहै छइ।

मकसुदन- काका, ओते जे मगजमारी करब से पार लागत। केतौ आगि लगौ आकि बज्जर खसौ, अपन कुरथी उलबैक अछि।

सोनेलाल- हँ से तँ बेस कहलह जे अनेरे अनका दिस मुँह तकै

छी। जखन एके सरकारमे मंत्रियो सबहक बीच मिलान नै रहै छै, एक-दोसराक काज नै बुझैए तखन जनताक तँ जनारदने मालिक किने..?

मकसुदन- हँ, तँ आरो की। अनकर भजन करैसँ नीक जे अपन दुखनामाक भजन करी।

(रौदीक प्रवेश)

सोनेलाल- बड़ हलचलाएल देखै छिअ रौदी। केतौ किछु भेल हेन की?

रौदी- सुनलौं हेन जे गाछ लगबैले सरकार गाछो दइ छै आ देखभाल करैले रुपैओ दइ छइ। सएह कनी ग्राम सेवकसँ भेँट करए जाएब।

सोनेलाल- जखन ओहन काज छेलह तँ पहिने ओम्हरेसँ ने भेल अबितह।

रौदी- ओमहुरका कोनो ठेकान अछि जे करवन हएत करवन नहि। तइले अपन मूड बनाएब छोड़ि देब। तहूमे सौंझका समए छी। ओहो जाबे भरि मन पीब मूडमे नहि अबैए ताबे की सोझ डारिये किछु बजैए।

सोनेलाल- हँ, से तँ हमहूँ सुनै छी। मुदा सभकेँ अपन-अपन खाँच होइ छइ। जेकरा-जेकरा संग खाँच बैसै छै तेकरा तेकरा-ले मूडक जरूरी नइ पड़ै छइ। सदिखन मूड बनले रहै छइ।

रौदी- काका, खाँच बैसैले एकत्वक जरूरत होइ छइ। तइले तँ मने ने राजा छी। सोचलौं जे अपनो भाँग पीबाक समए भाइये गेल, से नहि तँ मूड बनौनहि जाइ जे सभ काज करौनै आएब।

मकसुदन- भजार भाय, कथी सबहक गाछ छै, हमरो मन होइए जे अनेरे तीन कट्ठा हगनार बनौने छी। ओइमे गाछीए लगा देब नीक हएत।

रौदी- बहरबैया गाछ सभ छी। अपना ऐठाम अखन धरि कियो ने लगौने अछि। तँए कनी बेसी मन भऽ गेल। अछि।

मकसुदन- कोन बहरबैया गाछ सभ छइ?

रौदी- सबहक नाओं तँ नै बुझल अछि मुदा एक-आधटाक नाओं मन अछि, जेना- सागवान, महोगनी आ सौंख।

सोनेलाल- (मुस्की दैत) फल केहेन होइ छइ। आमसँ नमहर आकि छोट?

मकसुदन- अहूँ भाँसि गेलौं काका। आमो तँ सभ अकारक होइ छै किने! सजमनिया- घीबहा सजमनि जकाँ होइए आ बरबरिया सुपारी जकाँ।

रौदी- ओ गाछ फल-ले थोड़े लगौल जाइए। ओकर लकड़ी सुन्दरो आ सकतो होइ छै, जइसँ घरक समान नीक बनैए तँए महग बिकेबो करैए।

मकसुदन- कीनतै के? धनिकाहा कोठा-कोठी बनाइये नेने अछि बाँकी अछि गरिबाहा। ओ की करत ओहन लकड़ी? ओकरा तँ जिलेबियोक तरव्ताक केबाड़ जँ घरमे लगि जेतै तँ भरि दसमी दुर्गास्थानमे साँझ देत।

(छिपलीमे भाँगक तीनटा गोली, लोटामे पानि आ गिलास नेने बुधनीक प्रवेश)

सोनेलाल- (पत्नीसँ) ऐठाम भाँग रखि दियौ आ थर्मशमे छह कप चाह आ पान-सात खिल्ली पानो आनि कऽ रखि दियौ, अहाँकेँ छुट्टी भऽ गेल।

बुधनी- अहाँ छुट्टी देब की काज छुट्टी देत!

सोनेलाल- पएर पकैड़ कहै छी अहीं खुशी रहू।

बुधनी- अहींकेँ खुशी-ले ने अहू अवस्थामे सिलौट-लोढ़ी रगड़ै छी, तँ की बुझै छिऐ जे हम भंग पिसनिहारियेटा छी। केतए देखलिऐ जे देवता परसाद खाइ छथिन आकि सुंगहनियेँटा लइ छथिन।

सोनेलाल- अखन जाउ, दोसर गपमे लागल छी आ नहि जँ अहूँ गपकेँ गहियाबए चाहै छी तँ झब-दे भाँग खेने आउ ताबे हमहूँ सभ भाँग खा लइ छी।

बुधनी- जे गप करै छी से जँ सुनियेँ लेब तँ की होइए, पनचैतीए कऽ देब जे एना टारै छी।

सोनेलाल- टारै कहाँ छी, बहटारै छी। अधखरुआ गप सुनि जे

सौंसका पनचैती कऽ देबै तइसँ नीक जे नइ सुनू।

(बुधनी विदा भऽ जाइत अछि)

मकसुदन- अँए यौ काका, अहाँ ब्लौक जेनाइ छोड़ि देलिऐ जे अहींकेँ नै बुझल अछि?

सोनेलाल- धरमागती पुछह तँ ब्लौक दिस जाइमे नइ मन लगैए। समए छल जखन बुझै छेलिऐ जे ब्लौक हमरो छी मुदा तेहेन-तेहेन...।

रौदी- ई बात अहाँ ठीके कहै छिऐ काका, बी.डी.ओ. छला चौधरीजी जे रस्तो-पेरा आकि चौको-चोराहापर कागत हाथमे दइते दसखत कऽ दइ छला...।

सोनेलाल- चौधरीजीक विषयमे बुझल छह जे केहेन परिवारक छैथ।

रौदी- अहाँ जकाँ हम थोड़े बिडीओ साहैबक चौखरीमे बैसै छी जे केकरो जड़ि-छीप ताकब!

सोनेलाल- बौआ, आजादीक लड़ाइमे कालापानीक सजा पबैबला परिवारक छैथ चौधरीजी, मुदा सभ किछु...।

रौदी- मुदा की सभ किछु?

सोनेलाल- किछु ने। बौआ अखन भाँग नै पीलौं हेन चारि भरिसक बजबो ने कएल, तँए नीक-अधलाक कोनो विचार नै करै छी मुदा भाँग खेला पछाइत शिवजीक

दरबार जखन पहुँच जाइ-छी तखन गंगा स्नान कऽ गंगासागर धरि टहैल-बुलि अबै छी।

रौदी- ओना, हमहूँ औगताएले छी काका, की कहब तेहेन-तेहेन मुँहगरहा सभ भरि दिन मुड़ियारी देने रहैए जे पछुआएब तँ हुसि जाएब।

सोनेलाल- बौआ रौदी, जहिना भातीज मकसुदन तहिना तूँ छह। शिवजीक स्थानमे पहुँच गेल छी। आगुक थारीमे रखले अछि, हमरो लोक गामक ठीकेदारे बुझैए।

मकसुदन- काका, बिना कारणे टिटही नइ लगै छइ। हमरो बजैमे धाक नहियेँ होइए। अहूँक खेल-बेल देखले अछि।

सोनेलाल- तूँ दोसर नजरिये बुझि गेलहक। भेल कि जे गामेक नाओंपर बीस किलो धानक बीआ दऽ दइ आब कहह जे केना दू साए किसानक बीच बँटाएत?

मकसुदन- तेकर माने ई नहि ने भेल जे सोल्होअना अपनेटा खा ली?

सोनेलाल- तहूँ बिसैर जाइ छहक मकसुदन। ओइबेर अढ़ाइ साए ग्रामबला तोरी बिआक जे पौकेट आएल से तोरे ने सोल्होअना दऽ देने रहिहह।

रौदी- अहूँ सदिकाल काका रग्गड़े तकैत रहै छी। भेल तँ अहाँ धानक बीआ सोल्होअना खेलिऐ आ तोरीक बीआक जे आएल से सोल्होअना मकसुदन खेलक। दुनू गोरे जखन सोलहन्नीए खेलौं तखन तँ पनचैतियो ने

सोलहन्नीए हएत तँ छोड़ू ओइ बातकेँ... ।

सोनेलाल- हँ, हँ, छोड़ह। एकठाम रहब तँ अहिना कनी तीत कनी मीठ होइते रहत, तइले लोक मुहाँ-फुल्ली कऽ लेत।

रौदी- काका, एकटा बात तँ बिसरिये गेल छेलौं?

सोनेलाल- (सुनैक जिज्ञासा) की हौ, की..?

रौदी- अहाँक रमचेलबा घिनौलक!

सोनेलाल- के रमचेलबा हौ? हमरा तँ गामेमे केतेक ने रमचेलबा अछि। केकरा दऽ कहै छहक?

रौदी- सोझहेमे जे मकसुदन अछि?

सोनेलाल- की भेल?

रौदी- से ओकरेसँ पुछियौ।

सोनेलाल- की हौ मकसुदन?

(मकसुदनक मुँह लटकैत गेल, चुपचाप निच्चाँ मुहेँ मुड़ी गोंतए लगल, तैबीच फेर सोनेलाल बाजल।)

सोनेलाल- अच्छा छोड़ह मकसुदनकेँ। तोहीं बाजह रौदी?

रौदी- परसूखन एकटा बम्बैया दोस भँजियाएल। बम्बइसँ आएले रहए। सेठ ओकरा परसादी-ले एक किलो

कोन-ने-कोन रस देने रहइ। तइ चढ़बैले हमरो आ मकशूदनोकेँ कहलक, निमंत्रण देलक।

सोनेलाल- सोझहे रसेटा रहै आकि ओइ लागल औरो किछु रहइ?

रौदी- अहूँ सभ दिन गमैये रहि गेलौं काका। एक चम्मछसँ पेट थोड़े भरै छै, खैयो-पीबैक ओरियान केने रहए। कि कहाँ ढेरी रहै मुदा सभसँ नीक रसगुल्ला छल।

सोनेलाल- बीचमे अँठियाएल ने तँ रहह! अच्छा भेल की से बाजह।

रौदी- एक तँ हम सभ भंगखौका भेलौं, तहूमे दिनका नहि रौतुका, तइमे ओ किदैनक रस पिआ देलक। आगूमे रसगुल्ला देखि मकसुदन चढ़बए लगल। ऊहो बुझहै जे साक्षात देवते पहुँच गेल छैथ। आँजुर-आँजुर देने जाइ आ ई–मकसुदन–चढ़बए लगल।

सोनेलाल- एको दरजन चढ़ौलक की?

रौदी- अँए! दरजने कहै छिऐ, पचाससँ टपा देलक।

सोनेलाल- तखन तँ बहादुर, गामक टेक रखलक।

रौदी- गामक टेक जँ ठेक जकाँ रखैत तखन ने, से खाइते-खाइते पत्तेपर बोमकए लगल।

मकसुदन- ऐमे हमर कोनो गलती नै रहै काका, रहै एतबे जे जइ सीमानक जे नशेरी होइए ओ सभ निसाँकेँ एक्के सीमा

तक पचा सकैत अछि। मुदा सीमे नइ बुझि पेलिऐ। भेल सएह, नव चीज रहै लगले चढ़ि गेल। खाइकाल बुझबे ने केलिऐ, एमहर बरदक नाँगैर जकाँ पकैड़-पकैड़ कहए लगल। बेठेकान भऽ गलइ।

सोनेलाल- अच्छा जे भेल से भेल, एकटा कहह रौदी, जखन सागबाने लगेबह तखन आम-महु केतए बिआहबहक?

मकसुदन- काका, अहूँ बड़ रगड़ी छी। पशुपति नाथक सुखेलहा हड्डी चिबबै छी। अच्छा, काका एकटा कहू जे कौल्हका घटकैतीमे अहूँ जेबइ?

सोनेलाल- केकर, जीयालालक! हँ, कहने तँ छैथ मुदा जखन फजहैतमे पड़ै छी तखन होइए जे अनेरे कोन कुत्ता-बधिया करए चलि एलौं, मुदा जखन अढ़ाइ साए रसगुल्ला आ पाँच किलो मासुक आगि पेटमे बिलाइ जकाँ कुदैए तखन...।

(बुधनीक प्रवेश)

बुधनी- निरलज हएब जे घटकैतीमे जाएब। जिनगी भरि तँ घिनेलहे काज केलौं, आबो चेतू। बिआहक जे बरियाती चौबीस घन्टाक छल ओ भेल चारि-पाँच घन्टासँ एक घन्टाक। तइमे केकर मुँह के देखत?

सोनेलाल- अहाँ घर आँगनमे रहै छी, गामक बात नइ बुझबै। जखन बरियातीमे जाइ छी आ गौंआँ खाइबला खलीफा सँ पल्ला पड़ैए, तैठाम गामक पाग जँ गामक लोक नै राखत तँ अनगौंआँ केकरा के मदैत केलकै

हेन।

मकसुदन- मन हमरो जाइक नहि होइए, मुदा गुरु भऽ कऽ अहाँ जाइ आ हम संग छोड़ि दी ईहो तँ पापे हएत किने।

सोनेलाल- तोरा किए घटकैती बकछुहुल लगै छह?

मकसुदन- बुझलो बातकेँ अहाँ तेना ने बजै छी जेना अहाँकेँ किछु बुझले ने हुअए?

सोनेलाल- कोनो कि एकेटा काज एकरंगक अछि, काज-मे-काज गांथल अछि। कनी दूर बाजह, मन पड़ि जाएत।

मकसुदन- गंगबा बिआहमे नै देखलिऐ, दुनू पक्ष तेना उल्लर बना देलक जे छगुन्तेमे रहि गेलौं। जदी अधला काजकेँ नीक बना करब तखन ने नीक बात भेल। मुदा नीक काजकेँ अधला बना दइए! तँए...।

सोनेलाल- पिऔज जकाँ सोहैत जेबह, केतौ ने किछु भेटतह। मुहेँमे सभटा छइ। केतौ देखबहक जे कहतह- 'दस मिल करी काज, हारने-जीतने कोनो ने लाज।' मुदा दोसर चौकपर जाइते-जाइते कहै छै, 'संग मिल करी काज, हारने-जीतने कोनो ने लाज।' आ केकर संग? संगियों तँ संगीए छी। ◌

पटाक्षेप

शब्द संख्या : 1671

दोसर दृश्य-

(दलान नमहर। ओसारक एक भागमे एकटा टेबूल आ चारिटा कुरसी लागल। दोसर दिस सेहो टेबुलक संग कुरसी लागल। टेबुलपर देखनुक वस्तु राखल। बीचमे सिंहेश्वर ठाढ़। एक भाग मोहनलाल आ सोहनलाल बैसल आ दोसर दिस रूपलाल बैसल।)

रूपलाल- (मुड़ी उठा रस्ता दिस देखैत) सिंहेश्वर काका, केते बजेक समए देने छला बरतुहार?

सिंहेश्वर- आब कि हमरा सबहक जुग-जमाना रहल जे समैकेँ समए बुझि लोक चलत, आब तँ गाड़ी-सवारीक जुग एलइ। बाटमे तेते रूक्तापुर बनि गेल अछि जे जखने पहुँच जाथि तखुनके समए।

मोहनलाल- काका, ई की कहि देलिऐ, 'हमरा सबहक जुग-जमाना'?

सिंहेश्वर- बौआ, अखन तूँ सभ कौलेजमे पढ़ै छह, जखन जिनगीक कौलेजमे पढ़बह तखन हमरा बातक माने लगतह।

रूपलाल- काका, नश्ता-पानीक तँ ओरियान भाइये गेल अछि तखन औगताइये कथीक अछि, कनी ऐ बातकेँ सोझराइये दियौ। एते तँ जरुर बुझै छी जे पहिने जकाँ चारि गोरे एकठाम बैस जिनगीक गप नै करैए।

सिंहेश्वर- देखहक, एना जे जहपटार बजबहक तँ सवालक पथार लागि जेतह, जेकरा समटब पार नै लगतह, तइसँ की हेतह जे कोन सवालक जवाब की भेल सएह ओझरा जेतह तँए...।

मोहनलाल- अहाँक विचारकेँ हमहूँ मानै छी काका, रूपलाल भाइक प्रश्नकेँ पूरक प्रश्न मानि लिअ। जँ समए भेटत तँ कहि देबैन नहि तँ बाँकी रहलैन।

सिंहेश्वर- मोहन, ओना तोरो सवालक उत्तर नीक जकाँ नहियेँ देबह किएक तँ मन चौचंग अछि, बरतुहार सबहक समए भऽ गेल। दसे बजेक समए देने छला सबा दस बजैए।

मोहनलाल- काका, चारू दिस ताकब छोड़ि अदहो-छिदहो किछु कहियौ?

सिंहेश्वर- देखहक मोहन, जुग-जमानाक भीतर बहुत रास बात अछि मुदा तेतेमे नइ जा, अखन बियाहेक गप करह।

मोहनलाल- (मुस्की दैत) हँ, हँ! बड़बढ़ियाँ! बड़बढ़ियाँ!

सिंहेश्वर- ओना, दूटा विचारणीय बात अछि, मुदा समैयक लुकझुकी दुआरे पहिने बिआहक बरियातीक बात कहै छिअ।

रूपलाल- जखन कहै छिऐ तखन दुनू घाट मिला तेना कऽ कहियौ जइसँ धारक दुनू महारक सीमा बनि जाए।

सिंहेश्वर- बुझले छह जे धनिकपना ढाठीमे पढ़लौं कम बजलौं बेसी से साफे कहि दइ छिअ। अपना ऐठाम धर्मसूत्र-गृहसूत्र विषयपर ॠषि-मुनि सोचि-विचारि अपन विचार रखलैन।

मोहनलाल- ओ सभ तँ साक्षात् सरस्वतीक बरद पुत्र छला जे अखनो ओहिना टक-टक अहाँ दिस तकै छैथ।

सिंहेश्वर- हँ, से तँ छेलाहे। अपना ऐठाम बिआह परिवारक संग समाजोक महान यज्ञ छी। ऐ यज्ञ-ले चौबीस घन्टाक समए निर्धारित भेल। जे आग्रहपर अड़तालिसो घन्टाक भेल आ दुराग्रहपर घन्टो भरिक भऽ गेल मुदा अखुनका जकाँ मड़बा परहक बर जकाँ घुर-बहुर एते नइ भेल।

मोहनलाल- लड़का-लड़की–माने बर-कन्या–क पूछ केते छल बिआहमे?

सिंहेश्वर- सोलहन्नी छल। जेकर जीवन्त उदाहरण सीता स्वयंवर छी। कहाँ दशरथ बुझियो सकला जे बेटाक बिआह जनकपुरमे हएत। एहेन स्वयंवर सिरिफ सीते-टाक नहि भेलैन, समाजक बीच चलैन छल।

मोहनलाल- चौबीस घन्टाक समए-ले कार्यक्रमो तँ निर्धारित रहल हएत?

सिंहेश्वर- निसचित रहल अछि। प्रश्नो नान्हिटा नहि नमहर अछि। ओ ई अछि ई समाजक संग दू बेकतीक ओहन मिलन छी जे दुनियाँक रंगमंचपर आबि रहल अछि।

रूपलाल- सिंहेश्वर काका, भूखे भजन ने होई गोपाला, खाली बरे-कन्या आ बिआहक गप करब आकि किछु अनजलोक गप हेतइ।

मोहनलाल- काका, नश्ता-पानीक कथी ओरियान केने छी?

सिंहेश्वर- एना धिया-पुता जकाँ अनाड़ी किए बुझै छह जे अ-आ सिखबै छह?

मोहनलाल- काका, अहाँ दोसर हिसाबे हमरा गपकेँ बुझि गेलिऐ?

सिंहेश्वर- मोहन, बेटा-भातीज छह, एकर माने ई नहि जे तोरा विचारकेँ कदर नै कएल जाए, मुदा अखन तँ मने चौचंग अछि नहि तँ...।

रूपलाल- अनेरे अहाँ मनकेँ चौचंग केने छी काका, अच्छा अहाँ कनियेँ बिलमू हमसब सभ सरंजाम देखने अबै छी। परसै-ले तँ सतरह बापूत छीहे, ऐ बातकेँ सम्पन्ने कऽ दियौ।

सिंहेश्वर- आइक जे बरियाती आकि बिआहसँ पूर्वक जे प्रक्रिया अछि, जेना हथपकड़ी, लड़ूपान तिलक इत्यादि-इत्यादि जइमे खेनाइ-पीनाइ चलैए- ओकर की रूप छै समाजमे?

मोहनलाल- अहाँ जे बात कहै छिऐ ऐसँ तँ समाजे बहबाँरि भऽ गेल अछि! तखन..?

सिंहेश्वर- (मुड़ी डोलबैत) बिल्कुल सत कहलह। एहनो होइए जे एक गामसँ दोसर गाम अबै-जाइक आग्रहो होइए आ एहनो तँ होइते अछि जे माछ खाइले परसू अबै छी।

मोहनलाल- अनेरे कोन खता उपछैक भाँजमे पड़ल छी, ओकर आड़िये गिलगर माटिक छिऐ, करवन टुटि जाएत से बुझबे ने करबै?

सिंहेश्वर- हँ, से तँ अछिए। मुदा अही समाजमे ने जीबो करै छी। तेकरा निमाहैत चली सएह ने नीक हएत। मुदा विचारणीय प्रश्न तँ ऐछे जे एक-काजक-ले एक नियम बना चलब आ यत्र-कूत्र चलबमे अन्तर अछि। समाजक बन्धनकेँ ढील करैए।

मोहनलाल- खाएर छोड़ू, बड़ झमेल बुझि पड़ैए। जे कियो बरतुहार औता हुनका भरि मन खुएबैन किने?

सिंहेश्वर- यएह भारी बात भऽ गेल अछि। एक दिस लोक भरि दिन योगाभ्यासेक चर्च करैए दोसर दिस खाइ-पीबैक ठेकाने ने छइ! भरि मन खुआएब असान अछि।

मोहनलाल- से की?

सिंहेश्वर- देखै नै छहक जे बाप-बेटा एकठाम बैस बोतल-शीशी पीबैए आ नैतिकताक भाषण करैए। ओना अपन परिवारेक पीबैक चलैन बनि गेल अछि तँए पीबैक ओरियान की करब ओ तँ रहिते छइ। चारि-पाँच गोरे औता एक गोरेक चारि-पाँच दिनक खोराक भेल। मुदा एकटा बात... ।

मोहनलाल- (अकचकाइत) की एकटा बात?

सिंहेश्वर- अपना सभ एक गामक छिऐ तँए एक समाज भेलिऐ। जखने एक समाज भेलिऐ तखने सबहक जीवन-मरण भऽ गेल। किएक तँ समाजक प्रतिष्ठा बेकतीक नहि समाजक होइ छइ। तँए एक बनि हुनका सभकेँ डटि कऽ सुआगत करैक छह?

मोहनलाल- काका, कोन मरदुआरी सवाल उठा देलिऐ, आब की ओ जुग-जमाना रहल, आब तँ एक आदमी पचास आदमीक सुआगत कऽ सकैए।

सिंहेश्वर- देखहक बौआ, अपना समाजमे बुढ़बे लोक सभ दिससँ आएल अछि जे जेकर नून खाइऐ तेकर सेरियत दिऐ।

मोहनलाल- तइमे कोनो सन्देह बुझाइए?

सिंहेश्वर- बाजलपर बजै छी, अपने बाबाक खिस्सा कहै छिअ। बारीक दुआरे भोज घिना गेल। मुदा तैयो समाज तँ अथाह समुद्र छी एहेन-एहेन होइतो एलैए आ ताधैर होइते रहतै जाधैर सामाजिक तंत्र कमजोर रहत।

मोहनलाल- अखन हम सभ परीक्षे पास करै दुआरे प्रश्नोत्तरेसँ काज चलबैत एलौं, तँए ई सभ बात नै बुझै छी।

सिंहेश्वर- देखहक हमरा परिवारमे, परिवारमे की अपना गामेमे सुनील पहिल डाक्टर बनत, तीन महिना पछाइत

सर्टिफिकेट लऽ कऽ एबे करत।

मोहनलाल- हँ, से तँ सुनील पढ़ैयोमे सभ दिन नीक रहला।

सिंहेश्वर- ऐठाम प्रश्न सुनीलक अछि आकि समाजक। हरेलहो-भोथलेलहोक बिआह दस लाखक भऽ गेल अछि तैठाम ओही नजरिये ने देखए पड़त।

रूपलाल- से तँ देखइ पड़त। जँ से नै देखब तँ आन समाज कोन नजरिये देखत।

सिंहेश्वर- आन समाजक बात किए बजै छह, अपनो विचारि कऽ देखहक जे मड़ुआ-गहुम एके भेल?

रूपलाल- काका, अहाँकेँ सभ पीछराह कहै छैथ तँए अहाँसँ मुँह लगाएब गल-थोथैर हएत मुदा की मड़ुआ अन्न नहि छी?

सिंहेश्वर- हद करै छह रूपलाल, के कहै छह जे मड़ुआ अन्न नइ छी, ओइमे आयरन नै पएल जाइ छइ। केरलक लोक जे पढ़ैमे ओते तेज अछि से किए, ओकर खानो-पान तेहने छइ।

रूपलाल- तखन?

सिंहेश्वर- हम से नहि ने कहै छिअ। कहै छिअ जे मड़ुआ अन्नो छी आ ओइमे पौष्टिक तत्व सेहो पएल जाइ छै मुदा, अन्नके जखन बिलगेबहक तँ बुझि पड़तह जे अन्नो की सभटा अन्ने छी। कोनो कुअन छी तँ कोनो सुअन।

मड़ुआ, शाम-कौन इत्यादि कुअन छी।

रूपलाल- श्यामा चाउर केतए-सँ अबै छै जेकर तसमै पैघ-पैघ स्थान सबहक भोज्य अन्न छी।

सिंहेश्वर- देखहक रूपलाल, जलवायुक अनुकूल अन्न, फल, फूल इत्यादिक ग्रहण धरती करैत अछि। ओना किछु प्रकृति प्रदत छै जे धरती अपनो धारण कऽ लइए मुदा किछु मनुखोक अछि।

(आगू-आगू सोनेलाल हाथमे बेंत नेने, तइ पाछू रौदी-मकसुदन आ तइसँ पाछू छता नेने जीयालाल प्रवेश। कनी फरिक्केमे रूपलाल, मोहनलाल आ सोहनलाल ठाढ़ होइत)

रूपलाल- कुटुम नारायण सभ आबि गेला काका, अहाँ बैसले रहू, बतरसिया छी अहाँ।

सिंहेश्वर- आब तँ उमेरो भेल किने।

रूपलाल- ठेहुन ठीक अछि किने?

सिंहेश्वर- ठेहुन कहाँ ठीक अछि, जहिना बाँहि कनकनाइत रहैए तहिना ठेहुनो।

(चारू कुरसीपर चारू गोरेकेँ बैसबैत रूपलाल, मोहनलाल आ सोहनलाल दोसर सत्तैरमे कुरसीपर बैसैत। तैबीच एक गोरे तसतरीमे दस-बारह गिलास

ठंढा नेने अबैत। समाजबला टेबुलपर रखि गिलास उठा आगू बढ़ि सोनेलालक आगूमे रखैत अछि।)

सोनेलाल- बाउ, ई किए अनलौं हम सभ कन्यागत छी, आगू बढ़ि केना मुँह ऐंठाएब।

सिंहेश्वर- अपने शास्त्रीए बात कहलिऐ। मुदा समाजो आ समाजक बीच परिवारोक एहेन बेवहार होइ छै जे शास्त्रसँ हटियो कऽ होइ छइ। मानलौं अहाँ कन्यागत छी मुदा अखन तँ बटोही छी। जखन कथा कुटुमैतीक चर्च चलत तखन ने अहाँ कन्यागत आ हम सभ बरपक्ष हएब मुदा अखन तँ से नहि भेल अछि।

सोनेलाल- कहलिऐ तँ बेस बात मुदा दुनू गोरेक मंशा की अछि। यएह ने हम अपन बेटीक बिआह करब आ अहाँ बेटाक।

सिंहेश्वर- अपनेक सभ बात मानल मुदा कन्यागत आ बटोहीक बीच जे सीमा अछि ओइठाम शंका तँ अछिए।

मोहनलाल- कुटुम नारायण, ई सभ पुरना जमानाक चलैन भेल, समाज बदलल, समए बदलल, लोक बदलल, विचार बदलल तैसंग बेवहारो बदलत किने। ओ सभ छोड़ू। जहिना अहाँ कहै छी कन्यागत तहिना सिंहेश्वर काका, भेला बरपक्ष। हम सभ समाज छी सामाजिक रूपमे आग्रह करै छी।

सोनेलाल- जँ समाज बनि कहलौं तँ सहर्ष स्वीकार अछि।

(ठंढाक गिलास चारू गोरे हाथमे उठबैत अछि। तखने चाह-बिस्कुटबला अबैए। कियो हाँइ-हाँइ ठंढा पीबए लगैए तँ कियो एक्के बेरमे पीब जाइए। कियो हाँइ-हाँइ चाह पीबए लगैए। तही बीच एक गोरे पंचमेबा नेने अबैए।)

सोनेलाल- जहिना अहाँक समए अछि तहिना हमरो सबहक अछि, तँए नीक हएत जे ईहो सभ चलैत रहतै आ गपो-सपो चलैत रहतै।

मोहनलाल- कुटुम नारायण, कहलिऐ बड़ सुन्नर बात मुदा यएह तँ छी जिनगी। जे धियो-पुताकेँ अपना हाथे किछु पढ़ा-लिखा नै पबै छी। मुदा आशा करै छी अपनेबला बुधि होइ। पढ़तै अनकासँ बुधि हेतै अप्पन! मुदा जिनगीक जे क्रिया-कलाप, जैपर जिनगी ठाढ़ छै ओ तँ छइहे।

सोनेलाल- बढ़ियाँ बात कहलिऐ, ओछाइनपर माए-बाप पड़ल काहि काटि रहला अछि, मुदा सेवा-ले सन्तान लग समए कहाँ..!

मोहनलाल- (पंचमेवाक टुकड़ी मुँहमे लैत) कुटुम नारायण, लड़कीक की योग्यता छैन?

सोनेलाल- डाक्टरी पढ़ै छैथ। अन्तिम बर्खमे छह मास शेष रहलैन अछि।

सिंहेश्वर- लड़का-लड़कीक जोड़ा एकतरहक अछि। मुदा कुटमैतीमे तँ तीन जोड़ा लगबए पड़ै छइ। जहिना बरियाती तीन मन तहिना ने घरदेखियो एक जोड़ा

लड़का-लड़की दोसर जोड़ा परिवार गाम समाज आ तेसर जोड़ा।

मोहनलाल- हँ से तँ बेस कहलिऐ काका, जोड़ा तँ तीनूक हेतै मुदा आब तँ लोक फुद्दी भऽ गेल। बिआहक पछाइत चतुर्थीसँ पहिने दुरागमने भऽ जाइ छइ। आ दुरागमन होइते कियो केतौ, कियो केतौ जा कऽ रहए लगैए। आब कहू जे ओकरा समाज आ परिवार पछुएने फिरतै।

सिंहेश्वर- से तँ नै पछुएने फिरतै, मुदा आँखि मूनि किछु कैयो लेब नीक नै हेतइ।

सोनेलाल- गप-सप्प बहैक गेल।

सिंहेश्वर- बहकल कहाँ, भूमिका बन्हाएल। अहीं कहू जे अहाँ गामकेँ सुति उठि भोरे-भोर कियो नाओं नै लइए, से किए?

सोनेलाल- ई कहिया-केतएसँ लोक कहैए मुदा आब समाज आगू बढ़ल। ई नन्हिटा बात जे कोनो समाज लड़की डाक्टर लड़की वैज्ञानीक आ लड़की पायलट पैदा केलक। तँ आब ओइ नजरिये देखए पड़त।

सिंहेश्वर- एक अर्थमे उचित अछि। मुदा एक जमीन्दार परिवारक डाक्टर आ दोसर साधारण परिवारक डाक्टरक बीच ने कुटमैती भऽ रहल अछि।

सोनेलाल- हँ, से तँ भाइये रहल अछि। ओना जँ दुनू समाजक

परिचए भऽ जाए तँ लाभे-लाभ हएत।

मोहनलाल- पहिने कन्यागत दिससँ हुअए।

मकसुदन- पहिने जैठाम आएल छी से ने उचित हएत। घरक माइने नहि आ बाहरक माइन!

रूपलाल- सभ बातमे जोर केने ओहिना होइ छै जहिना गाड़ी आकि हरमे एकटा असथिर बरद रहल आ एकटा फरकाह। एहेन जोड़ासँ काज चलतै। कुटुमेक बात मानि लहुन।

मोहनलाल- काका, हम सभ छौड़ा-मारेड़ छी, गामक तरी-घटी नहि बुझै छी, अहाँ तँ परिवारे नै समाजमे श्रेष्ट छी तँए नीक हएत जे अपने परिचए दियौ।

सिंहेश्वर- अपन परिचए की दियौ, कोनो नुकाएल परिवार अछि। बेसी दूर तँ नइ जाएब, ओना पाँच पीढ़ी आ सात पीढ़ीक मिलान तँ कुटुमैतीमे हेबेक चाही।

रौदी- कुटुम नारायण, कहलिऐ बड़बढ़ियाँ मुदा एहनो समाज अछि जेकर बोही-खतियान नइ छै आ एहनो अछि जेकर छइ। एहेन स्थितीमे सतो झूठ आ झूठो सत हेतै कि नहि?

सिंहेश्वर- होइक संभावना छै, मुदा गारंटी नहि, भओ सकै छै आ नहियोँ भऽ सकै छइ।

सोनेलाल- फेर बात बहैक गेल! कुटुम नारायण, जे मन फुरैए जेते

मन फुरैए बजैत जाउ। कियो अपन अधकट्टी नाओंसँ परिचए दइ छैथ तँ कियो संज्ञाक संग सर्वनाम आ विशेषण इत्यादिक संग, मुदा छी परिचाइये।

सिंहेश्वर- हमर आठम पीढ़ी जमीन्दारी कीनि ऐ गाम ऐला। धर्मात्मा लोक रहैथ। धर्मसँ बेसी सिनेह रहैन। तइसँ परिवार उठिते गेल। पाँचम पीढ़ी अबैत-अबैत एगारह गामक जमीन्दार भेल।

मोहनलाल- काका, तेहेन कऽ चासब धरौलयैन जे दूओ कट्ठा समारल हएत की नहि हएत। ओते नै कहियौ। खाली लड़का, लड़काक परिवार आ समाजक विषयमे अखुनका बात बजियौ।

सिंहेश्वर- देखहक मोहन, भलेँ हिनको बेटी ओही विद्यालयमे पढ़लकैन जइमे हमरो बेटा पढ़लक। मुदा खरचो आ बेवस्थो एक रंग थोड़े रहल। हमरा की कोनो सेहन्ता अछि जे बेटा नोकरीए करए। मुदा...।

मोहनलाल- 'मुदा' की?

सिंहेश्वर- हिनकर बेटी कोनो की डाक्टरी करती। रानी बनि हाउस वाइफ रहती।

मोहनलाल- काका, आब अपन बात विसर्जन करू। मुरकुटी गप पुछै छी, दुनू गोरे जवाब दिअ। अनेरे केतौ नहि खाँच बैस जेतइ। कुटुम नारायण, अपने किछु कहियौ।

सोनेलाल- जीया भाय, जे जनै छी से बाजू। थोड़-थाड़ हमरो

बुझल अछि पछाइत जोड़ि देबइ।

जीयालाल- सोने भाय, अहूँकेँ बुझल अछि जे हमर बाबा दोखतरीपर छैथ। तँए कोन गामक परिचय दिऐन।

मोहनलाल- अखन जइ गाममे छी तेकर परिचए दियौ। गामक कोनो ठेकान नहि अछि, लगले पुर सँ पुरा भऽ जाइए आ विहाने-भने गमा चाहे टोलिया बनि जाइए। तँए छोड़ू ओइ झमेलकेँ।

सिंहेश्वर- तहूँ तँ बेटे-भातीज भेलह मोहन, जेहने मांग रहत तेहने ने हाथी जकाँ ढबगर रंगो छजत, से तँ विचार करए पड़तह किने?

जियालाल- जहाँ धरि सकरता हएत तहाँ धरि संग पूरब नहि तँ अहूँ अपन बाट धड़ब हमरो-ले दुनियाँ छइ।

सिंहेश्वर- ई तँ मानै छहक किने मोहन जे जेकरा घराड़ियो ने छै सेहो पाँच लाखक बिआह करैए, तइमे हमरा सन लोककेँ केहेन हेबा चाही?

मकसुदन- एना झाँपि-तोपि बजला सँ नइ हएत। कुटुमैती केना हएत ई जोगार सभ मिल लगाउ। जखने कियो किछु आ कियो किछु टिपबै तखने काज भँगठत।

सिंहेश्वर- एक्केबेर बाजि दइ छी जे पच्चीस लाख रुपैआ कन्यागत खर्च करैथ कुटुमैती हेबे करतैन।

(पच्चीस लाख, सुनि गुमा-गुमी पसैर गेल। सभ

सबहक मुँह, आँखि उठा-उठा देखबो करैत आ गरो करैत। जीयालालक आँखि सौनक मेघ जकाँ भरि जाइ छैन। मुड़ी गोंतने चद्दैरसँ आँखि पोछए लगै छैथ। मुदा मकसुदन आ रौदीक आँखि लाल गेल।)

मकसुदन- जीया काका, अपन अन्तिम विचार बाजि दियौ पछाइत बुझल जेतइ।

जीयालाल- बौआ मकसुदन, कोनो बड़ पुरान बात नहियेँ छी। चारि-पाँच बर्ख पहिलुका छी। पनरह बीघा अपना खेत छेलै साढ़े सत-सत बीघा दुनू भाए-बहिनक भेलइ। देखिते छहक जे बेटी केहेन पढ़ैमे तेज अछि।

मकसुदन- ऐमे के दूसत।

जीयालाल- अपनो मन मानि गेल जे बेटी किछु करत। अदहा सम्पैतक बाजी लगा देलौं, बेच कऽ पढ़ा देलिऐ।

सोनेलाल- पंचवेदीमे गाए नहि खाएब। अहाँ जे कहै छिऐ ओ भरि छाती गंगामे पसि बजलासँ हुअए वा गीता-रमायण उठौलासँ हुअए। सोलहन्नी सत बजलौं हेन। कुटुम नारायण, अखन धरि जे जीया भाय बेटीक प्रति उत्सर्जन केलैन ओ तँ अहींक हएत, तखन किछु विचार करियौ?

मोहनलाल- कुटुम नारायण, गंगा-कोसीक जखन बाढ़ि अबै छै तखन कोन घर खसौत आ कोन गाम देने कटनियाँ करत आ धार बनौत तेकर कोनो ठेकान छइ।

सोनेलाल- हँ, से तँ नहियेँ छै, मुदा..?

मोहनलाल- अहीं छातीपर हाथ रखि बाजू जे सिंहेश्वर काका जे बजला हेन से एहेन बजनिहार यएहटा छैथ आकि आनो-आनो गाम-समाजमे अछि।

सिंहेश्वर- पूबारि गामबला पनरह लाख टाका आ गाड़ी सोना सभ किछु दइले आएले छला, लड़की डाक्टरी नै पढ़ल छैलैन तँए कुटुमैती नइ भेल।

मोहनलाल- हँ, से तँ लड़केक माँग छैन।

सिंहेश्वर- किछु भेल तँ पढ़ल-लिखल जवान बेटा भेल किने, जे मुँहछोहैन केलक से जँ पूर्ति नै करबै से केहेन हएत। (रूपलाल दिस इशारा करैत)

रूपलाल- भाय साहैब, हम सभ बरपक्ष छी, अहूँ बातक मान नै हएत से थोड़-थाड़ हेबे करत मुदा सिंहेश्वर कक्काक विचार सर्वमान्य हेबा चाही।

जीयालाल- (देह थरथराइत) अपनेक ऐठाम नुकाइ-ले आएल छेलौं, जँ नुकाइक जगह नहि देब तँ चलिये जाएब मुदा हमहूँ झूठ नै कहलौं।
(ढबढ़बाएल आँखि चद्दैरसँ पोछए लगला।)

(मकसुदन उठि कऽ ठाढ़ होइए। तइ पाछू रौदी सोनेलाल सेहो उठि कऽ ठाढ़ होइ छैथ। जहिना मकसुदन तहिना रौदी सिंहेश्वरपर आँखि गड़ा मने-मन गुम्हरैत अछि। दोसर दिस रूपलाल, मोहनलाल,

सोहनलाल सेहो उठि कऽ ठाढ़ भेल। तीनू गोरे करवनो सिंहेश्वर दिस तकैत तँ करवनो जीयालाल दिस।)

सोहनलाल- (फरैक कऽ) अँइ हौ, डाँरमे दम नै छेलह तँ बेटी किए जनमेलह?

मकसुदन- (बाँहि समटैत) डाँरमे दम नै छइ। तोरा समाजकेँ डाँरमे दम नै छह जे दिन-देखार बेटी हलाल होइत रहै छह आ सभ मुँह तकै छह।

रूपलाल- (पीहकारी मारैत) बुड़ि कहीं-के, बड़ समाजबला भेला हेन! बाजह तँ गाममे केतेक हाथी आ घोड़ा छह। बड़ हेतह तँ कौल्हजोता बरद आ बोझउट्ठा घोड़ी, तहीपर समाजबला बनै छह।

(रौदी छड़ैप कऽ आगू बढ़ैए मुदा सोनेलाल पकैड़ लइ छइ।)

सोनेलाल- बौआ रौदी, एना बिगड़ह नहि। कियो अपन महींस कुरहैरे सँ नाथत तँ नाथह, मुदा जइ समाजमे विचारे नहि छै तेकर हम-तूँ की करबै।

(रूपलाल सोनेलालक गट्टा पकैड़ लैत अछि।)

रूपलाल- बड़ उचितवक्ता भेला अछि। बाप-माएक ठेकाने ने छैन आ प्रवचन झाड़ै छैथ!

सोनेलाल- अखन दरबज्जापर छी, गारि पढ़ी, मारी अपन मान-प्रतिष्ठा-ले करब। असकर छी जे मन फूरए सभ कऽ

लिअ।

मकसुदन- (सोनेलालक हाथ पकड़ैत) काका चलू। सभ अपन-अपन समाजक मालिक होइए। समाजक सभ माए-बहिनकेँ कहबै जे अर्द्धांगिनी कहौनिहारि वा जीवन-संगीनी कहौनिहारिक प्रति जे जोर-जुलुम भऽ रहल अछि, ओकर रक्षा अपने नइ करब तँ...। पुरुख सभ दिन अवहेलना करैत आएल आ सभ दिन करैत रहत।)

सोहनलाल- मुँह की तकै छह मोहन, दू हाथ चलए दहक।

मकसुदन- जँ केकरो माए दुध पीएने हेतै तँ हमरो सभकेँ पानि नै पिऔलक! फरिछेनहि जेबह।

सिंहेश्वर- छोड़ू, अनेरे अहाँ सभ बातक बतंगर करै छी। अहूँले दुनियाँ खाली अछि आ हमरो-ले अछि। जखने ब्रह्मा गढ़ै छथिन तखने जोड़ाक नामकरण सेहो कऽ दइ छथिन। जँ एक पुरुख तँ दोसर नारीए ने छी। अहीं दुनूक बीच ने मैत्री होइ छै जे जीवन संगीक रूपमे चलैत जिनगीक नैयाकेँ ऐपार-सँ-ओइपार पार करै छइ।

मकसुदन- सभ झूठ, सभ बकबास! जेहेन समाज तेहेन विचार...।ः

पटाक्षेप

शब्द संख्या : 2774

तेसर दृश्य-

(सोनेलालक दरबज्जा। चौकीपर बैस देबालमे ओङैठ आँखि बन्न केने सोनेलाल।)

मकसुदन- काका! काका! एना किए कुसमयमे सुतै छी?

(मकसुदनक अवाज सुनि बुधनी अँगने सँ बजैत।)

बुधनी- के छी यौ, के छी यौ। (बजबो करैत आ दरबज्जापर एबो करैत।)

सोनेलाल- बौआ मकसुदन, आबह-आबह!

मकसुदन- बड़ भकुआएल बुझि पड़ै छी?

सोनेलाल- भकुआएल कहाँ छी। किछु बात जिनगीक मन पड़ि गेल सएह बुकौर लगैए जे की चाहै छेलौं आ की भऽ रहल अछि...।

बुधनी- जिनगी भरि तँ छकल-बकलमे लागल रहलौं आ आब बुढ़ाड़ीमे सुमारक होइए।

सोनेलाल- अहाँ बातक मिसियो भरि दुख नै होइए, अपनो बुझि पड़ैए जे ठीके छकले-बकले केलौं। पेटक खातीर की ने केलौं। समाजसँ शासन धरि, जेतए गड़ लागल तेतइ

किछु पाबए चाहलौं।

मकसुदन- आब की उपाय हएत?

सोनेलाल- की कहबह। एते दिन ठीके बुझै छेलौं जे समाज बनि बजै छी मुदा एहेन बिगड़ान समाज बिगैड़ जाएत से कहियो मनमे उठलो ने छेलए।

मकसुदन- गारजन तुल्य छी, बेकतीगतो रूपे तँ किछु विचार देब किने।

सोनेलाल- विचार देबसँ नीक विचार करब हएत।
(पत्नी सँ)
कनी दू-घोंट चाह पीआ दइतौं तँ कण्ठ सर्रास भऽ जाइत।

बुधनी- चाह तँ बनिते छल। वएह छोड़ि कऽ ने आएल छेलौं।

सोनेलाल- नेने आउ।

(बुधनी जाइत अछि)

बौआ, समाजमे जखन डाक्टर सन लड़कीक एहेन गति भऽ रहल अछि तखन कम पढ़ल-लिखल वा नइ पढ़ल-लिखलक की गति हएत?

मकसुदन- यएह नहि बुझै छी काका! कम पढ़ल-लिखल वा नै पढ़ल-लिखलक तँ समस्या ऐछे मुदा एते भारी नइ अछि।

सोनेलाल- हमरा-तोरा-बुते रोकल हएत?

(बुधनी चाह नेने अबैए। तीनू गोरेक हाथमे चाह।)

सोनेलाल- श्यामक माए, जिनगीमे ऐते दुख कहियो नहि भेल जेते आब होइए। परसू जे घटकैतीमे गेलौं आ जे दशा भेल से अपने जनै छी। ऐसँ नीक मौगैत!

बुधनी- आब ऐ बुढ़ाड़ीमे कएल की हएत। जखन करैबला उमेर छेलए तखन करबे ने केलौं आ आब..?

सोनेलाल- छातीपर हाथ रखि बजै छी- बुझबे नहि केलौं। कोन बाट की भऽ जाइ छै से कहाँ बुझै छी।

बुधनी- एकटा काज करू, मनक सभ मौगैत मेटा जाएत।

सोनेलाल- (जिज्ञासासँ) की?

बुधनी- समाजकेँ कहि दियौन जे भाए-बहिन हमरासँ जे भूल-चूक भेल तेकरा अहाँ लोकैन माफ कऽ दिअ।

सोनेलाल- तइसँ भऽ जाएत?

बुधनी- भऽ केना जाएत! पैछला बुधिपर आड़ि पड़ि जाएत। आगू जे किछु करब से समाजक राय-विचारसँ करब। समाजक शक्ति समाजेक हाथ अछि।

सोनेलाल- गमैया काज गाममे हएत, मुदा बिआह तँ आने

समाजमे हएत?

बुधनी- जहिना ऐ समाजमे बेटा-बेटी छै तहिना ओहू समाजमे ने छइ। एक समाजक नीक दोसरो-ले ने नीक हएत। आकि दोसर-ले अधला हएत।

सोनेलाल- से तँ नहि हएत।

बुधनी- तखन?

सोनेलाल- मकसुदन, अखन तक जे किछु नीक-बेजाए केलौं से सभ झूठ! नीको आ अधलो भूत बनि माटिमे गड़ि गेल, मुदा...।

मकसुदन- 'मुदा' की?

सोनेलाल- यएह ने जे कहबह नहि। कहने ई होइ छै जे काका कहलैन, ओहिना थोड़े कहने हेता, तइसँ की हेतह जे तूँ ओडेंठ जेबह आ हमहूँ हुकुमदार जकाँ कहैत रहबह।

मकसुदन- काका, किछु भेलिऐ तँ अहाँ श्रेष्ठ भेलिऐ किने। जहिना नमहर जिनगी बीतल तहिना ने आमक आँठी जकाँ बुधियो-विचार सकताएल।

सोनेलाल- तूँ अपन भार फेकै छह बौआ। अपन मन हारि मानि गेल जे अखन धरिक जिनगी पानिमे चलि गेल। तइसँ नीक बुझि पड़ैए जे तूँ अखन कौलेजे छोड़लह अछि। तोरामे हमरा जकाँ अधला वृत्ति बेसी नै पैसलह, तूँ

बेसी कऽ सकै छह।

(रौदीक आगमन।)

रौदी- काका, किए समाद पठेने छेलौं। बजार जाइक विचार केने छी। कोनो तेहेन औगताइ अछि?

सोनेलाल- बौआ, औगताइ ऐछो आ नहियोँ अछि।

रौदी- से की?

सोनेलाल- पचास-पचपनक उमेर भऽ गेल हएत, मुदा...।

मकसुदन- नहि! तइसँ बेसी भेल हएत।

सोनेलाल- ओना नीक जकाँ ठेकान नइ अछि, मुदा तइसँ कमे भेल हएत जे बेसी नहि।

मकसुदन- से केना बुझै छिऐ। देखै छी नीचला दाँतो सँपधड़ू जकाँ हिलैए, माथक केशो सिलेब-चरक भऽ गेल आ साठि नहि टपल हएब!

सोनेलाल- हौ, तेते ने कोट-कचहरीक डल्डा-फल्डा खेने छी ने जे अछैते उमेर देह खा गेल। देखै नै छहक तौला जकाँ पेट भऽ गेल अछि।

रौदी- काका, हम औगताएल छी।

सोनेलाल- हँ, तँ कहै छेलियह जे अपन पैछला जिनगी दिस तकै

छी तँ बुझि पड़ैए जे ओहिना चलि गेल..! आगू जे बँचल अछि तेकरा चाहे छी जे काजमे लगाबी।

रौदी- ऐमे के नै कहत?

बुधनी- (मुस्की दैत) अहीं सन-सन लोक ने वृद्ध वेश्या तपस्विनी होइ छैथ।

मकसुदन- काका, अहाँ अपन औरदा दऽ दिअ, देखा दइ छी जे केना होइ छइ।

सोनेलाल- हौ, औरदा के देलकै हेन जे हम देबह। ओहिना लोक कहै छइ। हँ, अपन विचार, अपन इच्छा, अपन संकल्प दऽ सकै छिअ।

बुधनी- अहाँ सन-सन पुरुखक जेहने विचार तेहने संकल्प। कौआ जकाँ भरिये रातिमे तीन बेर विचार बदलै छी।

रौदी- काका, जखन अहाँक मनमे एहेन विचार आएल तँ सभ तरहेँ पीठपर रहब। परसुए, अहीं दुआरे गम खेलौं नहि तँ देखा दैतिऐ जे केकरो माए दूध पिऔलकै तँ हमरो पानि नै पिऔलक।

सोनेलाल- कियो अपन दुआर-दरबज्जाक मान-प्रतिष्ठा अपने बनबैए। एक दरबज्जा ओहन होइए जैठामसँ लोक हँसि कऽ जाइए आ दोसर ओहनो होइए जैठाम लोक कानि कऽ जाइए।

रौदी- काका, कहलिऐ बेस बात। मुदा जहिना दुनियाँमे ढेरो

सवाल छिड़ियाएल अछि तहिना ने ओकर जवाबो छिड़ियाएल छइ।

सोनेलाल- हँ, से तँ छइहे।

रौदी- जहिना अहाँ बुझै छी जे कियो अपना दरबज्जापर जँ दोसराकेँ गारिये पढ़ै छै आकि मारबे करै छै, तँ अपन गमबैए नै की मारि खेनिहारक किछु जाइ छै, तहिना तँ...।

मकसुदन- हँ काका, जँ कनी-मनी गारिये आकि मारिये खेने रहल तँ देह झाड़ि लेत मुदा जँ मौगैत आकि अधमौगैत करि कऽ मारै तँ के मरत?

सोनेलाल- (गुम भऽ मुड़ी डोलबैत) हँ, से तँ ठीके कहै छह! मुदा...।

रौदी- 'मुदा' की। यएह ने जे मारा-मारी करत तँ आन गामक गनल लोक गामक अनगिनत लोकक आगू फिका पड़ि जाएत, मुदा रणभूमि छिऐ।

सोनेलाल- की रणभूमि?

रौदी- काका, रणमे मरै दोख नहि लागे, ओहिना नै ने महराइमे लोक गबै छइ।

मकसुदन- काका, दुनू गोरे कोन बतकटौबैलमे लागि गेलौं। खैयो-पीबैक बेर भेल जाइए। जल्दी बिसरजन करू।

सोनेलाल- बौआ, होइए जे आब जेते औरदा अछि आ जेते काज करब से आइए की जे अखने करैले मन तनफनाइए। तँए, नहि किछु तँ की करब से तँ कम-सँ-कम विचारि लेब किने।

रौदी- (मुड़ी डोलबैत) बेस कहलिऐ काका। मुदा काज शुरू केतए-सँ करब, सएह ताकब कठिन अछि।

सोनेलाल- से की?

रौदी- रोटी जकाँ सौंसे एके रंग अछि। ओकर मुँह केनए बनेबै?

बुधनी- हाथसँ पकैड़ जेतएसँ तोड़ि कऽ उठा मुँहमे देबै तेतै ने रोटीक मुँह बनत।

सोनेलाल- हौ, बड़ भारी ओझरी देखै छी। जहिना खड़ौआ जौरकेँ देखै छहक जे कखनो जौर बँटला बाद ओझरेतह तँ कखनो पाके उघैर ओझरा जेतह, कखनो बँटैएकाल ओझरा जेतह तँ कखनो खेतक आड़ियेपर ओझरा जेतह।

मकसुदन- तेकर फलो तँ ओकरे होइ छै किने?

रौदी- ई पड़ाइक रस्ता भेल। भने सोनेकाका कहलखिन जे साबे उपजैसँ लऽ कऽ जाबे घरहट नहि कऽ लेब, ताबे तक ओझराइते रहैए। मुदा ओकरे नाओंपर 'घर बान्हब' कहलो जाइ छै किने?

सोनेलाल- तेतबे किए? जौर तँ पटुआक सेहो होइ छइ। जहिये-सँ गाछ जनमै छै तहिये-सँ अपना पैरपर ठाढ़ भऽ असगरे रौद-वसात सहैत पानिमे सड़ैत अपन रंग निखारि ओहन जौर बनैए जइसँ उपनैन-बिआहक मड़बा सेहो ठाठल जाइए।

बुधनी- आबो कनी होश करू। लगले किछु, लगले किछु बाजि दइ छिऐ!

सोनेलाल- कोनो झूठ बजलौं जे अहाँकेँ तामस उठि गेल?

बुधनी- केना नै तामस उठत। ठिकिया कऽ एकेटा बात किए ने बजलौं। जखन देखै छिऐ जे एक रहितो दुनूक दू जिनगी छै, तखन दुनू किए बजलिऐ? कोनो एक्केटाक ने ताक केतौ अबै छइ।

सोनेलाल- नै बुझलौं, कनी मुँह खोलि कऽ बजियौ।

बुधनी- हमरा कोनो लाज-धाक होइए जे नै बाजब। देखियौ, उघरल जौर जकाँ समाजक लोक उघैर गेल अछि। सभकेँ सभसँ मिलाने आ झगड़े रहै छइ। तँए एक-एककेँ पकैड़ जोड़ि काजक माध्यमसँ समाज बनत। वएह समाज बढ़ैत-बढ़ैत सामाजिक प्रतिष्ठा पाबि फड़त-फुलाएत। जे नान्हिटा नहि अछि।

सोनेलाल- केना नै अछि, नेनाकेँ जँ पोसबै-पालबै तँ की ओ समए पाबि पुरुष नइ भऽ सकैए। छोड़ू आब किछु ने, मकसुदन जीयालालकेँ बजाबह। सभ कियो छीहे। अखने विचारि लेब जे आगू की करैक अछि। भने

परसुका घटना टटके अछि। जीयालालकेँ बजाबह।

(मकसुदन जाइत अछि)

रौदी- हमहूँ अखन बजार जेनाइ छोड़ि दइ छिऐ।

(जीयालाल आ मकसुदनक प्रवेश)

सोनेलाल- संयोग शुभ बुझि पड़ैए। जेना रस्तेपर जीयालाल ठाढ़ भेट गेल हुअ तहिना लगले आबि गेलह।

जीयालाल- सोने भाय, परसूसँ जेना राति-के नीन नै होइए। भरि दिन भरि राति मन वौआइत रहैए जे बेटीकेँ अनेरे किए पढ़ेलौं। जे बेच कऽ पढ़ेलौं तइसँ बिआहे कऽ दैतिऐ। बापक धरम तँ निमाहि लइतौं।

सोनेलाल- बेटा-बेटीक बिआह करब माए-बापक धरम भेल, मुदा पढ़ाएबकेँ की कहबै?
(जीयालाल गुम भेल। कखनो सोनेलालक चेहरा देखैत तँ लगले आँखि घुमा बुधनीक चेहरा देखैत। लगले फेर रौदीपर नजैर दैत आ लगले बाहर दिस देखैत।)

मकसुदन- काका, एना झँपने-तोपने काज नहि चलत। दोहरा कऽ ओहनठाम नइ जाएब, जैठाम मनुक्खक खरीद-बिकरी होइए।

सोनेलाल- मकसुदन बजलह तँ लाख रुपैआक, मुदा विवाह-पद्धति तँ दू समाजक काज छी, एक समाजसँ केना बनत?

बुधनी- किए नहि बनत? जे बेटी जइ समाजमे जनम लेलक की ओइ समाजकेँ ओकर जीवन दान करैक शक्ति नइ छइ? एक समाज नहि, सभ समाजक बीच बेटा-बेटी अछि। तँए सभकेँ रस्ता बनबए पड़तैन। सामाजिक रोग दहेज छी, जे देव निर्मित नहि मनुक्ख निर्मित छी।

रौदी- जीयालाल काका, अहूँ सोल्हन्नी भार नइ उठा सकै छी। कारण जे महिलाकेँ खुद तैयार हुअ पड़तैन। हम सभ सहयोगी हेबैन।

सोनेलाल- जँ सभ कियो कहह तँ एकटा बात बाजब?
(मकसुदन, रौदी, जीयालाल समवेत स्वरमे)
बाजू-बाजू।

सोनेलाल- जीया भाय, अहाँ सुशीलाकेँ कहि दियौ। बेटी, जन्मसँ लऽ कऽ पढ़ा-लिखा कऽ जुआन बना देलियह। आब अपन, अपन परिवार, अपन समाजक नाक-कान बँचबैत तूँ स्वतंत्र जिनगी जीबैक हकदार छह। अपन करह। ़

पटाक्षेप

शब्द संख्या : 1506

चारिम दृश्य-

(जीयालालक दरबज्जा। जीयालाल बैसल। रूक्मिणीक प्रवेश।)

रूक्मिणी- एना गोबर-गोइठा जकाँ बैसने काज चलत?

जीयालाल- से तँ नइ चलत। मुदा अनेरे पानियोँ डेंगाएब तँ काज नहियेँ ने छी।

रूक्मिणी- की पानि डेंगाएब?

जीयालाल- कोनो काज करैमे जखन बाधा उपस्थित भऽ जाइ छै तखन बिनु बाधाकेँ भगौने काज थोड़े हएत।

रूक्मिणी- से तँ नहि हएत मुदा तँए की लोक परियास छोड़ि देत।

जीयालाल- से तँ नइ छोड़त, मुदा ऐगलो परियासक फल नीके हेतै तेकरो ठेकान तँ नहियेँ ने अछि।

रूक्मिणी- से तँ नहि छै, मुदा सोलहन्नी नहियेँ छै एहनो तँ नहियेँ ने मानल जाएत, भैयो सकै छै किने?

जीयालाल- करेज खोलि कऽ चारिम दिनक बात कहै छी। ओना झँपले-तोपल कहने रही तइसँ भरिसक अहूँ नीक जकाँ सभ बात नहियेँ बुझलिऐ।

रूक्मिणी- यएह ने पुरुखक दोख कहियौ आकि छल-कपट कहियौ जे स्त्रीगणकेँ अपन कएल काज मुँह फोरि नै कहता। ई दोख की कोनो अहींटामे अछि आकि सभ दिनेसँ होइत आएल अछि।

जीयालाल- कहलौं बेस बात, मुदा सभ बात कहबो तँ नीक नहियेँ ने हएत। खाएर जे हौउ। चारिम दिन जे सुशीलाक प्रति बरक भाँजमे गेल रही से कहै छी।

रूक्मिणी- आइ जे कहै छी से चारिम दिन एला पछाइत किए ने कहलौं?

जीयालाल- किछु एहनो बात भेल जेकरा नहियेँ बाजब उचित बुझलौं तँए नै कहलौं। मुदा अखन बुझै छी जे बाजबे उचित अछि तँए कहै छी। अपना काजे समाज मारियेटा नहि खेलैन बाँकी कर्म तँ भाइए गेलैन।

रूक्मिणी- (जिज्ञासासँ) से की! से की?

जीयालाल- जखन सुशीलाक बिआहक खर्चक बात उठल तँ लड़िकाक पिता पच्चीस लाख रुपैआ खर्च करैक मांग रखलैन।

रूक्मिणी- अहाँ की उत्तर दिलिऐन?

जीयालाल- कहलयैन एते सकरता नै अछि।

रूक्मिणी- केहेन बढ़ियाँ तँ कहलयैन तखन...।

जीयालाल- (फरैक कऽ) एह! तखन! पीहकारी-पर-पीहकारी पड़ए लगल। पीहकारीकेँ पीहकारी बुझि पहिने तँ किछु ने कियो बजला मुदा पछाइत जखन गारिक बौछार कानमे पड़ए लगलैन तखन... ।

रूक्मिणी- ऐ सबहक जड़ि कारण अछि बेटीकेँ पढ़ाएब। अनेरे एते बेटीकेँ पढ़ेलौं। जेते पढ़ेबामे खरच भेल ओते जँ बिआहेमे करितौं तँ डाक्टर परिवार बनि बेटी रहैत।

जीयालाल- हँ से तँ रहैत। मुदा बेटा-बेटीमे की अन्तर छइ। बाप-माएले जहिना बेटा तहिना बेटी।

रूक्मिणी- बहुत अन्तर छइ। मनाही केने रहौं जे घर-परिवार चलबैक लूरि बेटीकेँ भऽ जाए, बस भऽ गेल ओकर पढ़ाइ।

जीयालाल- किए?

रूक्मिणी- बहुतो कारण अछि। मुदा सोझहा-सोझही बुझू जे नारीकेँ पुरुखक संग ऐ दुआरे लगौल जाइ छै जे सन्तान पैदा होइसँ पहिनौं आ पछाइतो रोग-वियाधिक बीच पड़ि जाइत अछि, तैठाम दोसराक मदैतक जरूरत पड़ै छइ। तैसंग देहोक एते शक्तिक ह्रास होइ छै जइसँ दैनंदिनक जे क्रिया-कलाप अछि से नहि कऽ पबैए।

(किशोरक प्रवेश)

जीयालाल- बौआ, स्कूल किए ने गेलह?

किशोर- पढ़ाइए ने होइ छै तँ अनेरे की करए जाएब।

जीयालाल- किए ने पढ़ाइ होइ छै, शिक्षक सभ नै छैथ?

किशोर- ने अबैक ठेकान छैन आ ने पढ़बैक।

जीयालाल- स्कूलक जखन यएह गति छह तखन घरोपर तँ ओइ हिसाबक समए बना पढ़बह तखने ने पासो करबह आ दू अक्षरक बोधो हेतह।

किशोर- से तँ साँझ-भोर पढ़िते छी। चारिम दिन जे बहिनक बिआहक विषयमे गेल रही से की भेल?

जीयालाल- बाल-बोध बुझि तोरा नै कहबह से नीक नै बुझि पड़ैए। बहिन तँ तोरे छिअ। जिनगी भरि तोहीं सोझहामे रहबहक। हम दुनू बेकती तँ बुढ़ाएल जाइ छी। दिनो-दिन घटिते जाएब।

(सुशीला अबैत अछि)

जीयालाल- बुच्ची, आब केते दिन पढ़ाइ बाँकी रहलह?

रूक्मिणी- आब सुशीलाक बिआहोक जोगार करैक अछि।

सुशीला- (उत्साहित होइत) माए, हमर चिन्ता छोड़ि दे।

रूक्मिणी- बेटी जाति छह एना नै बाजह!

सुशीला- मुँह बन्न केने थोड़े हएत। चारिम दिनक सभ बात बुझल अछि। जहिना जनकपुरमे सीता धनुष उठा एक संकल्प पैदा केलैन तहिना दहेजक खिलाफ हमहूँ अपन संकल्पसँ संकल्पित होइ छी।

जीयालाल- (खुशी होइत) बुच्ची, अकलबेराक बाल-बोधक खेल संकल्प नहि होइ छइ। संकल्प कठिन मेहनत आ साहस मंगै छइ।

सुशीला- जहिना दुनू प्राणी अहाँ हमरा पराने नहि, जिनगी जीबैक प्रण सेहो देलौं तहिना अहीं सोझहामे स्वतंत्र जिनगी जीबैक प्रण सेहो लइ छी। दुनियाँ किछु कहह, मुदा अहाँ महापुरुषक काज कऽ चुकल छी। हमहूँ किछु करब।

जीयालाल- बुच्ची, अही आशा-ले ने एते केलौं। नहि तँ आन बापकेँ देखै छिऐ जे खेत कीनै-ले जे रुपैआ गनि कऽ रखि दइए ओ बेटोक बिमारीमे नै खर्च कऽ पबैए, भलेँ बेटा मरिये किए ने जाउ। तैठाम हम अपन दुनू परानीक हिस्सा काटि बेच-बिकीन कऽ चुका देलियह। आब बाँकी की बँचैए जे...।

सुशीला- आइए नहि, अदौसँ नारीक प्रति अवहेलना होइत एलैए। पुरुष प्रधान समाज नव-नव अवहेलनाक बाट सिरैज-सिरैज अवहेलना करैत आएल, जेकरा रोकैक जरूरत छइ।

जीयालाल- हँ से तँ छइ! मुदा अपना संग अपन परिवार आ समाजोक प्रतिष्ठाकेँ अंगीकार करैत ने कियो किछु

करत।

सुशीला- (हँसैत) बाबू, जहिना महान साधक जनक धनुष तोड़ेसँ पहिने सीताक कौमार्य जीवन आ पारिवारिक जीवनक सम्बन्धमे विचारलैन आकि नहि विचारलैन से तँ ओ जानैथ मुदा जहिना सासुरमे कियो कनियासँ माए, माएसँ दादी होइत जिनगी गुदस करैए तँ कियो बेटी, बहिन, दीदी, दादी होइत सेहो ओतै पहुँच जाइए तहिना...।

रूक्मिणी- बेटी, बेटी-जातिक सीमासँ बाहर नइ हुअ। किछु भेलखुन तँ जन्मदाता गुरु भेलखुन। अखन हम छिअ जे कहैक छह से हमरा कहह। जँ हम नै रहितिय तखन तोरा मुँह फोड़ैक अधिकार छेलह।

सुशीला- माए, जहिना समैयक परिवर्त्तन होइ छै तहिना सभ कथूक होइ छइ। सभ कथूक भेने मनुक्ख ओइसँ अलग नहि भऽ सकैए। धर्मक–माने पवित्र जिनगी जीबैक मंत्रक–जे रूप रहल ओ अकाट्य अछि, मुदा किछु पुरान पड़ैत गेल, किछु नव अबैत गेल, ओकरा तँ देखि-सुनि परखए पड़त किने।

रूक्मिणी- हँ, से तँ परखए पड़त, मुदा समस्योकेँ पोखैरक जाल जकाँ एक्केबेर तँ नहि फेकल जाएत। महजाल जकाँ एक भागसँ लगबैत-लगबैत सौंसे पोखैर पसारल जाइत।

सुशीला- हँ पसारल जाइत, तइमे सभ माछ फँसिये जाएत से कोनो जरूरी तँ नहि, जे ढेंग जकाँ ओंघराइत जाएत

ओ फँसत आ जे जालक भीर अपनाकेँ अबहि ने दैत ओ तँ छुट्टा रहबे करत?

रूक्मिणी- से तँ रहत, मुदा लोको-लाज तँ किछु छिऐ किने?

सुशीला- हँ छिऐ, मुदा लोक-लाज की, से तँ विचारए पड़त। समाजमे देखै छी जे बारह बर्खक कन्याँ, जे बिआहक पाँच दिनक पछाइत वैधव्य प्राप्त केलैन आ साए बर्खक जिनगी बहिन, दीदी, दादीक रूपमे व्यतीत करै छैथ। हुनका की कहबै? जे दोहरा कऽ दोसर पुरुषक संगी नहि भऽ सकैत, ओहन नारी-ले समाज किए चुप अछि?

रूक्मिणी- चुपे कहाँ अछि। मनुक्ख तँ अपना मनक मालिक होइ छै, ओ बान्ह-छान्ह थोड़े मानै छइ। घोड़ा जकाँ छानलो रहै छै तैयो चरि-चरि हाथ कुदैत रहैए। मुदा तूँ तँ पढ़ल-लिखल बेटी भेलह। तोरा तँ ई सभ बात बुझए पड़तह किने?

सुशीला- हँ माए, बुझए पड़त। मुदा...।

रूक्मिणी- 'मुदा' की?

सुशीला- माए, जाधैर बेटी माए-बाप ऐठाम रहैए ताधैर जे जिनगी छै ओ बिआहक पछाइत एकाएक बदैल जाइ छै आ ओत्तैसँ पुरुखक मनमानी शुरू होइ छइ।

रूक्मिणी- हँ से तँ होइ छइ। मुदा माइयो-बापक किछु एहेन कर्तव्य अछि जेकर सीमा बनौल अछि। तही सीमाक

भीतर ने बेटीक बिआह सेहो अछि।

सुशीला- हँ अछि। मुदा जिनगी बदलैक जे सीमा बनल अछि ओकरो सुधारैक अछि किने। अरवन तोरा हमर बिआहक जहीन लगि गेल छौ?

रूक्मिणी- बुच्ची, नवकवेरिया छह तँए औगताइ छह। तोहीं किछुए दिनक पछाइत डाक्टर बनि नोकरी करए जेबह, असगरे बाहर केना जेबह? केकरा संगे जेबह?

सुशीला- हम अरवन ने बिआह करब आ ने नोकरी करब। जइ समाजक बेटी छिऐ तइ समाजकेँ बाप बुझि सेवा करबै, हमरा सेवाक बहुत बेसी जरूरत समाजकेँ छइ।

रूक्मिणी- बुच्ची, हम तँ जन्मे देलियह, कर्म तँ अपने करए पड़तह।

सुशीला- (हँसैत) अहाँ दुनू गोरे असीरवाद दिअ जे कोनो समाज दहेजक जाल लगौलक तँ ओइ जालकेँ केना निष्काम बनौल जाए, ई तँ करए पड़त।

पटाक्षेप

समाप्त

शब्द संख्या : 1185

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक दस बर्खक लेखन क्रम:

416. पाइक मोल- शब्द संख्या: 2412, तिथि: 22 दिसम्बर 2013
417. चोरूक्का झगड़ा- शब्द संख्या: 538, तिथि: 24 दिसम्बर 2013
418. अपसोच- शब्द संख्या: 548, तिथि: 26 दिसम्बर 2013
419. पतझाड़- शब्द संख्या: 2587, तिथि: 31 दिसम्बर 2013
419. झीसीक मजा- शब्द संख्या: 453, तिथि: 1 जनवरी 2014
420. मति-गति- शब्द संख्या: 1807, तिथि: 07 जनवरी 2014
421. रिजल्ट- शब्द संख्या: 2343, तिथि: 16 जनवरी 2014
422. अपन सन मुँह- शब्द संख्या: 5696, तिथि: 25 जनवरी 2014
423. सुमति- शब्द संख्या: 3072, तिथि: 30 जनवरी 2014
424. फेर पुछबैन- शब्द संख्या: 346, तिथि: 31 जनवरी 2014
425. माघक घूर- शब्द संख्या: 1683, तिथि: 06 फरवरी 2014
426. खर्च- शब्द संख्या: 330, तिथि: 07 फरवरी 2014
427. अखरा-दोखरा- शब्द संख्या: 342, तिथि: 10 फरवरी 2014
428. पेटगनाह- शब्द संख्या: 593, तिथि: 14 फरवरी 2014
429. बड़की माता- शब्द संख्या: 1224, तिथि: 18 फरवरी 2014
430. धरती-अकास- शब्द संख्या: 184 , तिथि: 19 फरवरी 2014
431. बकठाँइ- शब्द संख्या: 883, तिथि: 24 फरवरी 2014
432. चैन-बेचैन- शब्द संख्या: 936, तिथि: 09 मार्च 2014
433. हथियाएल खुरपी- शब्द संख्या: 645 , तिथि: 11 मार्च 2014
434. अलपुरिया बरी- शब्द संख्या: 287, तिथि: 12 मार्च 2014
435. नीक बोल- शब्द संख्या: 565, तिथि: 13 मार्च 2014

436. सुआद- शब्द संख्या: 624, तिथि: 14 मार्च 2014
437. गंगा नहेलौं- शब्द संख्या: 690, तिथि: 19 मार्च 2014
438. भोँटक गहमी- शब्द संख्या: 508, तिथि: 24 मार्च 2014
439. भँसैत नाह- शब्द संख्या: 597, तिथि: 26 मार्च 2014
440. पान पराग- शब्द संख्या: 1692, तिथि: 29 मार्च 2014
441. सिरमा- शब्द संख्या: 760, तिथि: 31 मार्च 2014
442. नौमीक हकार- शब्द संख्या: 1119, तिथि: 03 अप्रैल 2014
443. फोंक मकड़- शब्द संख्या: 1744, तिथि: 10 अप्रैल 2014
444. केते लग केते दूर- शब्द संख्या: 1252, तिथि: 14 अप्रैल 2014
445. अभिनव अनुभव- शब्द संख्या: 326, तिथि: 16 अप्रैल 2014
446. खोंटकर्मा- शब्द संख्या: 1184, तिथि: 19 अप्रैल 2014
447. किछु ने- शब्द संख्या: 503, तिथि: 22 अप्रैल 2014
448. झकास- शब्द संख्या: 1589, तिथि: 26 अप्रैल 2014
449. अप्पन-बीरान- शब्द संख्या: 2919, तिथि: 01 मई 2014
450. सजमनियाँ आम- शब्द संख्या: 611, तिथि: 04 मई 2014
451. अर्जुन रोग- शब्द संख्या: 1003, तिथि: 7 मई 2014
452. गरदैन कट्टा बेटा- शब्द संख्या: 575, तिथि: 10 मई 2014
453. नैहराक धाड़- शब्द संख्या: 885, तिथि: 14 मई 2014
454. अवाक- शब्द संख्या: 1041, तिथि: 17 मई 2014
455. पोखैरक सैरात- शब्द संख्या: 923, तिथि: 20 मई 2014
456. दनियाँ डाबा- शब्द संख्या: 409, तिथि: 22 मई 2014
457. धरम काँट- शब्द संख्या: 395, तिथि: 23 मई 2014
458. पल भरि- शब्द संख्या: 1116, तिथि: 24 मई 2014
459. किरदानी- शब्द संख्या: 5309, तिथि: 14 जून 2014
460. सगहा- शब्द संख्या: 2860, तिथि: 22 जून 2014
461. अकाल- शब्द संख्या: 1238, तिथि: 24 जून 2014
462. उझट बात- शब्द संख्या: 1152, तिथि: 26 जून 2014
463. कर्जखौक- शब्द संख्या: 1175, तिथि: 2 जुलाई 2014
464. उनटन- शब्द संख्या: 1187, तिथि: 6 जुलाई 2014

465. रेहना चाची- शब्द संख्या: 1307, तिथि: 9 जुलाई 2014
466. बुधनी दादी- शब्द संख्या: 1256, तिथि: 11 जुलाई 2014
467. अउतरित प्रश्न- शब्द संख्या: 1229, तिथि: 14 जुलाई 2014
468. हारि- शब्द संख्या: 1240, तिथि: 16 जुलाई 2014
469. सोनाक सुइत- शब्द संख्या: 1135, तिथि: 17 जुलाई 2014
470. मरुभूमि- शब्द संख्या: 1214, तिथि: 20 जुलाई 2014
471. असगरे- शब्द संख्या: 1557, तिथि: 24 जुलाई 2014
472. पुरनी नानी- शब्द संख्या: 1304, तिथि: 27 जुलाई 2014
473. कटा-कटी- शब्द संख्या: 1140, तिथि: 30 जुलाई 2014
474. केते लग केते दूर- शब्द संख्या: 1206, तिथि: 3 अगस्त 2014
475. गलती अपने भेल- शब्द संख्या:3386, तिथि: 06 अगस्त 2014
476. चोरक चोरबती- शब्द संख्या: 884, तिथि: 6 अगस्त 2014
477. घर तोड़ि देलिऐ- शब्द संख्या: 1527, तिथि: 10 अगस्त 2014
478. सजल स्मृति- शब्द संख्या: 2363, तिथि: 14 अगस्त 2014
479. सनेस- शब्द संख्या: 2654, तिथि: 16 अगस्त 2014
480. सए कच्छे- शब्द संख्या: 488, तिथि: 19 अगस्त 2014
481. एक मुठी घास- शब्द संख्या: 411, तिथि: 21 अगस्त 2014
482. करिछौंह मुँह- शब्द संख्या: 318, तिथि: 24 अगस्त 2014
483. पुरस्कार- शब्द संख्या: 2414, तिथि: 24 अगस्त 2014
484. गावीस मोइस- शब्द संख्या: 687, तिथि: 29 अगस्त 2014
485. मनकमना- शब्द संख्या: 6110, तिथि: 19 सितम्बर 2014
486. घरवास- शब्द संख्या: 4879, तिथि: 26 सितम्बर 2014
487. समधीन- शब्द संख्या: 6098, तिथि: 04 अक्टूबर 2014
488. चापाकलक पाइप- शब्द संख्या: 1616, तिथि: 7 अक्टूबर 2014
489. कलम हानि कS- शब्द संख्या: 2226, तिथि: 10 अक्टूबर 2014
490. लतियाएल जिनगी- शब्द संख्या: 1184, तिथि: 14 अक्टूबर 2014
491. गामक शकल-सूरत- शब्द संख्या: 2596, तिथि: 20 अक्टूबर 2014
492. जितिया पाबैन- शब्द संख्या: 3706, तिथि: 24 अक्टूबर 2014
493. सुखाएल सूरत- शब्द संख्या: 3690, तिथि: 30 अक्टूबर 2014

494. भैयारी हक- शब्द संख्या: 3131, तिथि: 4 नवम्बर 2014
495. ठकुआएल भुसवा- शब्द संख्या: 3335, तिथि: 13 नवम्बर 2014
496. खुदियाएल- शब्द संख्या: 2887, तिथि: 17 नवम्बर 2014
497. खटहा आम- शब्द संख्या: 3515, तिथि: 22 नवम्बर 2014
498. ढकरपेँच- शब्द संख्या: 3759, तिथि: 30 नवम्बर 2014
499. असहाज- शब्द संख्या: 2865, तिथि: 04 दिसम्बर 2014
500. समरथाइक भूत- शब्द संख्या: 3853, तिथि: 07 दिसम्बर 2014
501. विदाइ- शब्द संख्या: 5131, तिथि: 17 दिसम्बर 2014
502. खलओदार- शब्द संख्या: 735, तिथि: 19 दिसम्बर 2014
503. मनुखदेवा- शब्द संख्या: 1027, तिथि: 22 दिसम्बर 2014
504. उमेद- शब्द संख्या: 3643, तिथि: 31 दिसम्बर 2014
505. गलगर भैंस- शब्द संख्या: 3392, तिथि: 4 जनवरी 2015
506. जाड़ फाटि गेल- शब्द संख्या: 3328, तिथि: 9 जनवरी 2015
507. सुरता- शब्द संख्या: 3304, तिथि: 15 जनवरी 2015
508. असुध मन- शब्द संख्या: 2353, तिथि: 19 जनवरी 2015
509. धरमूदासक अखड़ाहा- शब्द संख्या: 1410, तिथि: 21 जनवरी 2015
510. ठोररंगू- शब्द संख्या: 1531, तिथि: 23 जनवरी 2015
511. लगबे ने कएल- शब्द संख्या: 1449, तिथि: 25 जनवरी 2015
512. उकडू समय- शब्द संख्या: 1467, तिथि: 27 जनवरी 2015
513. चास-बास दुनू गेल- शब्द संख्या: 1615, तिथि: 29 जनवरी 2015
514. चौरचनक दही- शब्द संख्या: 2095, तिथि: 31 जनवरी 2015
515. अपन मन अपन धन- शब्द संख्या: 1532, तिथि: 3 फरवरी 2015
516. टुटली मरैया- शब्द संख्या: 1951, तिथि: 7 फरवरी 2015
517. हकार- तिथि: 11 फरवरी 2015, शब्द संख्या: 1911
518. दहेजुआ गाए- शब्द संख्या: 1908, तिथि: 15 फरवरी 2015
519. मेटाइत जिनगी- शब्द संख्या: 2129, तिथि: 20 फरवरी 2015
520. धुर बुड़ि तोरा बजै ने अबै छौ!- शब्द संख्या:1996, तिथि: 23 फरवरी 2015
521. लेहाज- शब्द संख्या: 1906, तिथि: 26 फरवरी 2015
522. विचार हेरा गेल- शब्द संख्या: 1917, तिथि: 1 मार्च 2015

523. ओ दिन- शब्द संख्या: 1782, तिथि: 4 मार्च 2015
524. उरीन- शब्द संख्या: 3235, तिथि: 8 मार्च 2015
526. नहरकन्हा- शब्द संख्या: 1209, तिथि: 11 मार्च 2015
527. बटखौक- शब्द संख्या: 1272, तिथि: 14 मार्च 2015
528. पसेनाक धरम- शब्द संख्या: 1263, तिथि: 16 मार्च 2015
529. जेठुआ गरदा- शब्द संख्या: 1103, तिथि: 18 मार्च 2015
530. हँसीएमे उड़ि गेलौं- शब्द संख्या: 1243, तिथि: 20 मार्च 2015
531. बुड़िबकहा बुड़िबक बनौलक- शब्द संख्या: 1234, तिथि: 23 मार्च 2015
532. हमर बाइनिक विचार- शब्द संख्या: 1207, तिथि: 26 मार्च 2015
533. नोकरिहारा- शब्द संख्या: 1146, तिथि: 26 मार्च 2015
534. घसवाहि- शब्द संख्या: 1213, तिथि: 28 मार्च 2015
535. तेतर भाइक कविता- शब्द संख्या: 1319, तिथि: 1 अप्रैल 2015
536. छूआ- शब्द संख्या: 1223, तिथि: 6 अप्रैल 2015
537. दोसराइत- शब्द संख्या: 1270, तिथि: 9 अप्रैल 2015
538. लछनमान- शब्द संख्या: 1173, तिथि: 13 अप्रैल 2015
539. हमर कोन दोख- शब्द संख्या: 1527, तिथि: 17 अप्रैल 2015
540. मौसी- शब्द संख्या: 1393, तिथि: 21 अप्रैल 2015
541. नटकिया गति- शब्द संख्या: 1313 24 अप्रैल 2015
542. खाए चाहैए- शब्द संख्या: 1223, तिथि: 27 अप्रैल 2015
543. मधुमाछी- शब्द संख्या: 1892, तिथि: 07 मई 2015
544. दनगर घास- शब्द संख्या: 2775, तिथि: 13 मई 2015
545. सझिया खेती- शब्द संख्या: 3135, तिथि: 23 मई 2015
546. मुफतिया माल- शब्द संख्या: 3231, तिथि: 29 मई 2015
547. मथाहाथ- शब्द संख्या: 2923, तिथि: 02 जून 2015
548. पहपैट- शब्द संख्या: 1369, तिथि: 05 जून 2015
549. इजोरिया राति- शब्द संख्या: 1512, तिथि: 07 जून 2015
550. तीन जुगिया भाय- शब्द संख्या: 2010, तिथि: 12 जून 2015
551. अँगनेमे हेरा गेलौं- शब्द संख्या: 605, तिथि: 14 जून 2015
552. डकरा हाल- शब्द संख्या: 2529, तिथि: 17 जून 2015

553. जेतए जे हौउ- शब्द संख्या: 2062, तिथि: 21 जून 2015
554. गठूलाक गारि- शब्द संख्या: 1532, तिथि: 25 जून 2015
555. कनी हमरो सुनू- शब्द संख्या: 1983, तिथि: 29 जून 2015
556. गामक बान्ह- शब्द संख्या: 2437, तिथि: 03 जुलाई 2015
557. गुड़ा खुद्दीक रोटी- शब्द संख्या: 2443, तिथि: 08 जुलाई 2015
558. सीरक गाछ- शब्द संख्या: 3071, तिथि: 13 जुलाई 2015
559. हरदीक हरदा- शब्द संख्या: 2924, तिथि: 19 जुलाई 2015
560. जाम- शब्द संख्या: 3355, तिथि: 29 जुलाई 2015
561. गण्डा- शब्द संख्या: 2304, तिथि: 5 अगस्त 2015
562. हाथी आ मूस- शब्द संख्या: 3016, तिथि: 11 अगस्त 2015
563. मुसरी आ घोड़ा- शब्द संख्या: 3625, तिथि: 17 अगस्त 2015
564. फलहार- शब्द संख्या: 2350, तिथि: 25 अगस्त 2015
565. भोरक झगड़ा- शब्द संख्या: 2697, तिथि: 31 अगस्त 2015
566. क्रियाशील- शब्द संख्या: 3395, तिथि: 13 सितम्बर 2015
567. आइ एम शॉरी- शब्द संख्या: 2927, तिथि: 23 सितम्बर 2015
568. ओऽ होऽ होऽ हूसि गेल- शब्द संख्या: 1025, तिथि: 29 सितम्बर 2015
569. मीनी भ्रष्टाचार- शब्द संख्या: 825, तिथि: 5 अक्टूबर 2015
570. गजपट खेती- शब्द संख्या: 1171, तिथि: 8 अक्टूबर 2015
571. समुद्री विद्या- शब्द संख्या: 787, तिथि: 11 अक्टूबर 2015
572. राकशे रहि गेलौं- शब्द संख्या: 959, तिथि: 12 अक्टूबर 2015
573. निनिया देवीक आराधना- शब्द संख्या: 679, तिथि: 13 अक्टूबर 2015
574. बताहे बताह बनौलक- शब्द संख्या: 574, तिथि: 15 अक्टूबर 2015
575. धोखा- शब्द संख्या: 1172, तिथि: 17 अक्टूबर 2015
576. खसैत गाछ- शब्द संख्या: 2234, तिथि: 22 अक्टूबर 2015
577. ठूठ गाछ- एक: शब्द संख्या: 1790, तिथि: 25 अक्टुबर 2015
578. ठूठ गाछ- दू: शब्द संख्या: 1203, तिथि: 29 अक्टुबर 2015
579. वैष्णवी भगवती- शब्द संख्या: 2099, तिथि: 01 नवम्बर 2015
580. ठूठ गाछ- तीन: शब्द संख्या: 999, तिथि: 04 नवम्बर 2015
581. ठूठ गाछ- चारि: शब्द संख्या: 1494, तिथि: 07 नवम्बर 2015

582. ठूठ गाछ- पाँच: शब्द संख्या: 2363, तिथि: 12 नवम्बर 2015
583. ठूठ गाछ- छह: शब्द संख्या: 1539, तिथि: 17 नवम्बर 2015
584. ठूठ गाछ- सात: शब्द संख्या: 3232, तिथि: 23 नवम्बर 2015
585. ठूठ गाछ- आठ: शब्द संख्या: 2780, तिथि: 01 दिसम्बर 2015
586. ठूठ गाछ- नअ 'क': शब्द संख्या: 2091, तिथि: 06 दिसम्बर 2015
587. ठूठ गाछ- नअ 'ख': शब्द संख्या: 1083, तिथि: 08 दिसम्बर 2015
588. ठूठ गाछ- नअ 'ग': शब्द संख्या: 1296, तिथि: 10 दिसम्बर 2015
589. ठूठ गाछ, दस- शब्द संख्या: 3304, तिथि: 16 दिसम्बर 2015
590. प्रीगर शत्रु- शब्द संख्या: 1087, तिथि: 26 दिसम्बर 2015
591. एगच्छा आमक गाछ- शब्द संख्या: 1172, तिथि: 31 दिसम्बर 2015
592. माघ नहाइले जाएब- शब्द संख्या: 2616, तिथि: 4 जनवरी 2016
593. एक घोंट पानि- शब्द संख्या: 2516, तिथि: 10 जनवरी 2016
594. एते दिन अपना-ले आब अनका-ले- शब्द: 3371, तिथि: 16 जनवरी 2016
595. माइक वचन- शब्द संख्या: 2999, तिथि: 21 जनवरी 2016
596. पान- शब्द संख्या: 3115, तिथि: 26 जनवरी 2016
597. आजुक जिनगीक आइ परीक्षा- शब्द: 1676, तिथि: 01 फरवरी 2016
598. शुभचिन्तक- शब्द संख्या: 3947, तिथि: 08 फरवरी 2016
599. करिछौन लाली- शब्द संख्या: 3000, तिथि: 13 फरवरी 2016
600. मोहरा- शब्द संख्या: 1223, तिथि: 15 फरवरी 2016
601. अपन पुरखाक डीह- शब्द संख्या: 1187, तिथि: 17 फरवरी 2016
602. जेना हाथी रही- शब्द संख्या: 1245, तिथि: 20 फरवरी 2016
603. कठफल- शब्द संख्या: 1294, तिथि: 22 फरवरी 2016
604. गामे उपैट गेल- शब्द संख्या: 1680, तिथि: 25 फरवरी 2016
605. झूठे- शब्द संख्या: 1969, तिथि: 29 फरवरी 2016
606. लाही- शब्द संख्या: 2335, तिथि: 3 मार्च 2016
607. परतीहा खढ़- शब्द संख्या: 1667, तिथि: 6 मार्च 2016
608. उजगी- शब्द संख्या: 1079, तिथि: 9 मार्च 2016
609. हाथक जिनगी- शब्द संख्या: 983, तिथि: 14 मार्च 2016
610. गाछपर सँ खसला- शब्द संख्या: 2000, तिथि: 20 मार्च 2016

611. केतौ ने रहलौं- शब्द संख्या: 2103, तिथि: 25 मार्च 2016
612. अपने केलहा- शब्द संख्या: 2314, तिथि: 31 मार्च 2016
613. बत्तु- शब्द संख्या: 2244, तिथि: 10 अप्रैल 2016
614. कछमछी- शब्द संख्या: 2322, तिथि: 15 अप्रैल 2016
615. गैत-वीध- शब्द संख्या: 2424, तिथि: 21 अप्रैल 2016
616. दियरबा-भैंसुर- शब्द संख्या: 2089, तिथि: 29 अप्रैल 2016
617. एक दिन- शब्द संख्या: 2063, तिथि: 5 मई 2016
618. दुधियाएल बरखा- शब्द संख्या: 2059, तिथि: 11 मई 2016
619. गलफूलू- शब्द संख्या: 2117, तिथि: 14 मई 2016
620. बिटगरहा- शब्द संख्या: 1992, तिथि: 19 मई 2016
621. आब नइ आगि लगैए- शब्द संख्या: 1962, तिथि: 23 मई 2016
622. कटौज- शब्द संख्या: 1977, तिथि: 28 मई 2016
623. बाल बोध- शब्द संख्या: 2621, तिथि: 2 जून 2016
624. डभियाएल गाम- शब्द संख्या: 2483, तिथि: 6 जून 2016
625. एकबोलिया दादी- शब्द संख्या: 2189, तिथि: 11 जून 2016
626. मरियाएल मन- शब्द संख्या: 1921, तिथि: 17 जून 2016
627. त्राहि-कृष्ण- शब्द संख्या: 2900, तिथि: 23 जून 2016
628. कन्हा भँट्टा- शब्द संख्या: 2539, तिथि: 30 जून 2016
629. जिगेसा- शब्द संख्या: 3977, तिथि: 8 जुलाई 2016
630. गुलेती दास- शब्द संख्या: 5993, तिथि: 12 अगस्त 2016
631. भोलानाथ बाबा- शब्द संख्या: 2359, तिथि: 17 अगस्त 2016
632. दुरकाल- शब्द संख्या: 3189, तिथि: 22 अगस्त 2016
633. कलंक- शब्द संख्या: 2763, तिथि: 27 अगस्त 2016
634. अड़िकट्टा चोर- शब्द संख्या: 2077, तिथि: 31 अगस्त 2016
635. बगदल गाम- शब्द संख्या: 2405, तिथि: 6 सितम्बर 2016
636. बत्तीसोअना- शब्द संख्या: 890, तिथि: 8 सितम्बर 2016
637. कचहरिया रोग- शब्द संख्या: 1651, तिथि: 12 सितम्बर 2016
638. दिन घटि गेल- शब्द संख्या: 2425, तिथि: 5 अक्टूबर 2016
639. मुड़ियाएल घर- शब्द संख्या: 2352, तिथि: 11 अक्टूबर 2016

640. गामक सुरता- शब्द संख्या: 2265, तिथि: 19 अक्टूबर 2016
641. खतियाएल घर- शब्द संख्या: 2057, तिथि: 09 नवम्बर 2016
642. बात-कथा सुनौलक- शब्द संख्या: 1889, तिथि: 15 नवम्बर 2016
643. अनका बेर ओंघी- शब्द संख्या: 2233, तिथि: 20 नवम्बर 2016
644. देव उठान- शब्द संख्या: 2297, तिथि: 24 नवम्बर 2016
645. नमहर घरक चोरि- शब्द संख्या: 2397, तिथि: 28 नवम्बर 2016
646. भोरक सपना- शब्द संख्या: 1013, तिथि: 1 दिसम्बर 2016
647. बालमण्डली- शब्द संख्या: 1288, तिथि: 6 दिसम्बर 2016
648. धोखा केतए भेल- शब्द संख्या: 1053, तिथि: 09 दिसम्बर 2016
649. माघक चाह- शब्द संख्या: 1330, तिथि: 12 दिसम्बर 2016
650. भँसियाएल बाल-बोध- शब्द संख्या: 1306, तिथि: 15 दिसम्बर 2016
651. माघक घूर- शब्द संख्या: 1812, तिथि: 18 दिसम्बर 2016
652. पाही पट्टी- शब्द संख्या: 2370, तिथि: 25 दिसम्बर 2016
653. बीरांगना- शब्द संख्या: 1551, तिथि: 30 दिसम्बर 2016
654. स्मृति शेष- शब्द संख्या: 1941, तिथि: 6 जनवरी 2017
655. मनकेँ फुसलबै छी- शब्द संख्या: 1023, तिथि: 10 जनवरी 2017
656. चहकल विचार- शब्द संख्या: 4173, तिथि: 20 जनवरी 2017
657. विदाइ-दैछना- शब्द संख्या: 2312, तिथि: 25 जनवरी 2017
658. बीरांगना: 2- शब्द संख्या: 1992, 29 जनवरी 2017
659. पकिया चेला- शब्द संख्या: 1976, तिथि: 06 फरवरी 2017
660. कान फुटल कप- शब्द संख्या: 1595, तिथि: 09 फरवरी 2017
661. वर्थ डे- शब्द संख्या: 2535, तिथि: 16 फरवरी 2017
662. जानक मोल- शब्द संख्या: 2782, तिथि: 23 फरवरी 2017
663. गामक कटान- शब्द संख्या: 3115, तिथि: 01 मार्च 2017
664. कर्जा- शब्द संख्या: 3252, तिथि: 07 मार्च 2017
665. बेटीक लिलसा- शब्द संख्या: 2621, तिथि: 11 मार्च 2017
666. अपन गारि अपन दुआरि- शब्द संख्या: 2546, तिथि: 17 मार्च 2017
667. बेटीक पैरुख- शब्द संख्या: 2735, तिथि: 26 मार्च 2017
668. बेटीक कुभेला- शब्द संख्या: 2767, तिथि: 31 मार्च 2017

669. अपन रोपल गाछी भुताहि- शब्द संख्या: 2619, तिथि: 7 अप्रैल 2017
670. बलधकेल कटौज- शब्द संख्या: 2100, तिथि: 11 अप्रैल 2017
671. जारैनक दुख मेटा गेल- शब्द संख्या: 2465, तिथि: 17 अप्रैल 2017
672. पढ़ल सुगा बौक- शब्द संख्या: 3775, तिथि: 26 अप्रैल 2017
673. हरवाहि- शब्द संख्या: 2784, तिथि: मजदूर दिवस (01 मई) 2017
674. क्रान्तियोग- शब्द संख्या: 3432, तिथि: 13 मई 2017
675. उचितवक्ता- शब्द संख्या: 3461, तिथि: 19 मई 2017
676. खेतक बँटवारा- शब्द संख्या: 3607, तिथि: 24 मई 2017
677. विघटन- शब्द संख्या: 3419, तिथि: 31 मई 2017
678. टुटल मनक जुटान- शब्द संख्या: 3456, तिथि: 06 जून 2017
679. बाबा बेलेश्वरनाथ- शब्द संख्या: 2420, तिथि: 11 जून 2017
680. भुतलग्गू आकि भविसलग्गू- शब्द संख्या: 2465, तिथि: 23 जून 2017
681. मर्माहत- शब्द संख्या: 2509, तिथि: 29 जून 2017
682. गुणहीन- शब्द संख्या: 3138, तिथि: 6 जुलाई 2017
683. समझौता- शब्द संख्या: 2280, तिथि: 13 जुलाई 2017
684. जेकर चुन तेकर पुन- शब्द संख्या: 2696, तिथि: 19 जुलाई 2017
685. त्रिकालदर्शी- शब्द संख्या: 2841, तिथि: 25 जुलाई 2017
686. नमहर फेरा- शब्द संख्या: 2902, तिथि: 29 जुलाई 2017
687. आशापर पानि पड़ल- शब्द संख्या: 2391, तिथि: 02 अगस्त 2017
688. कोढ़िया सरधुआ- शब्द संख्या: 2279, तिथि: 06 अगस्त 2017
689. बेटपन- शब्द संख्या: 3054, तिथि: 11 अगस्त 2017
690. छातीक हार- शब्द संख्या: 2291, तिथि: 16 अगस्त 2017
691. उमेरक लेहाज- शब्द संख्या: 2986, तिथि: 22 अगस्त 2017
692. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- शब्द संख्या: 2472, तिथि: 05 सितम्बर 2017
693. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं- एक: श. सं.: 1630, तिथि: 14 सितम्बर 2017
694. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं- दू: श. सं.: 2878, 18 सितम्बर 2017
695. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं- तीन: श. सं.: 2318, 22 सितम्बर 2017
696. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं- चारि: श. सं.: 2239, 26 सितम्बर 2017
697. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं- पाँच: श. सं.: 1903, 29 सितम्बर 2017

698. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं- छह: श. सं.: 2450, 03 अक्टुबर 2017

699. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं- सात: श. सं.: 2040, 07 अक्टुबर 2017

700. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं- आठ: श. सं.: 2403, 12 अक्टुबर 2017

701. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं- नअ: श. सं.: 5046, 19 अक्टुबर 2017

702. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं- दस: श. सं.: 794, 19 अक्टुबर 2017

703. पुरान साड़ी- शब्द संख्या: शब्द संख्या: 2453, तिथि: 24 अक्टूबर 2017

704. गाम बिसैर गेल- शब्द संख्या: 2482, तिथि: 28 अक्टूबर 2017

705. ऐँठ साड़ी- शब्द संख्या: 2925, तिथि: 01 नवम्बर 2017

706. लहसन- एक: शब्द संख्या: 3169, तिथि: 10 नवम्बर 2017

707. किछु ने फुरैए- शब्द संख्या: 2095, तिथि: 12 नवम्बर 2017

708. लहसन- दू: शब्द संख्या: 2031, तिथि: 17 नवम्बर 2017

709. महिरम- शब्द संख्या: 1984, तिथि: 20 नवम्बर 2017

710. लहसन- तीन: शब्द संख्या: 2592, तिथि: 25 नवम्बर 2017

711. बेर परहक भदवा- शब्द संख्या: 2726, तिथि: 29 नवम्बर 2017

712. लहसन- चारि: शब्द संख्या: 2562, तिथि: 4 दिसम्बर 2017

713. सड़क-कातक खेत- शब्द संख्या: 2722, तिथि: 10 दिसम्बर 2017

714. दोहरी हाक- शब्द संख्या: 2700, तिथि: 21 दिसम्बर 2017

715. लहसन- पाँच: शब्द संख्या: 4691, तिथि: 30 दिसम्बर 2017

716. पाइक इज्जत- शब्द संख्या: 1999, तिथि: 05 जनवरी 2018

717. सेहन्ता- शब्द संख्या: 2014, तिथि: 11 जनवरी 2018

718. राक्षसक झड़- शब्द संख्या: 1649, तिथि: 15 जनवरी 2018

719. बेरपर- शब्द संख्या: 2585, तिथि: 19 जनवरी 2018

720. केकरा-ले केलौं- शब्द संख्या: 2649, तिथि: 23 जनवरी 2018

721. स्वाभिमानी जिनगी- शब्द संख्या: 2767, तिथि: 28 जनवरी 2018

722. बाबाक बाग-बगिया- शब्द संख्या: 3089, तिथि: 3 फरवरी 2018

723. अब-तब- शब्द संख्या: 2076, तिथि: 7 फरवरी 2018

724. अगिलह- शब्द संख्या: 2472, तिथि: 11 फरवरी 2018

725. लहसन- छह: शब्द संख्या: 2240, तिथि: 15 फरवरी 2018

726. लहसन- सात: शब्द संख्या: 1026, तिथि: 18 फरवरी 2018

727. लहसन- आठ: शब्द संख्या: 2220, तिथि: 22 फरवरी 2018
728. लहसन- नअ: शब्द संख्या: 2015, तिथि: 25 फरवरी 2018
729. कुकुरपन- शब्द संख्या: 2229, तिथि: 28 फरवरी 2018
730. हेराएल जिनगी- शब्द संख्या: 3107, तिथि: 5 मार्च 2018
731. आशापर पानि फेर गेल- शब्द संख्या: 2447, तिथि: 9 मार्च 2018
732. देखल दिन- शब्द संख्या: 2592, तिथि: 27 मार्च 2018
733. इज्जत उतैर गेल- शब्द संख्या: 1905, तिथि: 30 मार्च 2018
734. संकट- शब्द संख्या: 2595, तिथि: 4 अप्रैल 2018
735. एकतीस मार्च- शब्द संख्या: 2814, तिथि: 10 अप्रैल 2018
736. गेल माघ उनतीस दिन बॉकी- शब्द संख्या: 2391, तिथि: 15 अप्रैल 2018
737. बापक चलैत- शब्द संख्या: 2606, तिथि: 20 अप्रैल 2018
738. बेटाक चलैत- शब्द संख्या: 2889, तिथि: 25 अप्रैल 2018
739. प्रवल इच्छा- शब्द संख्या: 2301, तिथि: 30 अप्रैल 2018
740. पंगु- एक: शब्द संख्या: 6478, तिथि: 11 मई 2018
741. पंगु- दू: शब्द संख्या: 2156, तिथि: 15 मई 2018
742. पंगु- तीन: शब्द संख्या: 2092, तिथि: 21 मई 2018
743. पंगु- चारि: शब्द संख्या: 2177, तिथि: 24 मई 2018
744. पंगु- पाँच: शब्द संख्या: 2492, तिथि: 27 मई 2018
745. पंगु- छह: शब्द संख्या: 1853, तिथि: 30 मई 2018
746. पंगु- सात: शब्द संख्या: 911, तिथि: 02 जून 2018
747. पंगु- आठ: शब्द संख्या: 1945, तिथि: 4 जून 2018
748. पंगु- नअ: शब्द संख्या: 935, तिथि: 6 जून 2018
749. ठका गेलौं- शब्द संख्या: 2052, तिथि: 18 जून 2018
750. हारि-जीत- शब्द संख्या: 3190, तिथि: 24 जून 2018
751. पनचैती पनपना गेल- शब्द संख्या: 1095, तिथि: 27 जून 2018
752. कुघाटक मृत्यु- शब्द संख्या: 1608, तिथि: 01 जुलाई 2018
753. एक तम्मा सिदहा- शब्द संख्या: 2014, तिथि: 5 जुलाई 2018
754. कियो ने पुछैए- शब्द संख्या: 1584, तिथि: 9 जुलाई 2018
755. केकरो कियो ने- शब्द संख्या: 718, तिथि: 11 जुलाई 2018

756. गपक पियाहुल लोक- शब्द संख्या: 1420, तिथि: 13 जुलाई 2018
757. उदय-प्रलय- शब्द संख्या: 1574, तिथि: 15 जुलाई 2018
758. हमरा नीक नहि लगैए- शब्द संख्या: 1458, तिथि: 19 जुलाई 2018
759. भारीपन भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1471, तिथि: 21 जुलाई 2018
760. मानसरोवरक यात्रा- शब्द संख्या: 2576, तिथि: 31 जुलाई 2018
761. करतब- शब्द संख्या: 2132, तिथि: 04 अगस्त 2018
762. आमक गाछी- एक: शब्द संख्या: 3068, तिथि: 10 अगस्त 2018
763. आमक गाछी- दू: शब्द संख्या: 3553, तिथि: 17 अगस्त 2018
764. आमक गाछी- तीन: शब्द संख्या: 2484, तिथि: 22 अगस्त 2018
765. आमक गाछी- चारि: शब्द संख्या: 2291, तिथि: 28 अगस्त 2018
766. आमक गाछी- पाँच: शब्द संख्या: 2185, तिथि: 02 सितम्बर 2018
767. आमक गाछी- छह: शब्द संख्या: 4701, चोरा चान 12 सितम्बर 2018
768. आमक गाछी- सात: शब्द संख्या: 1805, तिथि: 15 सितम्बर 2018
769. अनचोकक अन्हार- शब्द संख्या: 924, तिथि: 19 सितम्बर 2018
770. आमक गाछी, आठ- शब्द संख्या: 1917, तिथि: 25 सितम्बर 2018
771. अपन बुधियारी अपने खेलक- शब्द संख्या: 1897, ति.: 23 सितम्बर 2018
772. आमक गाछी, नअ- शब्द संख्या: 1914, तिथि: 30 सितम्बर 2018
773. चटवाह- शब्द संख्या- 2134, तिथि: 4 अक्टूबर 2018
774. भगैतिया- शब्द संख्या: 2177, तिथि: 8 अक्टूबर 2018
775. अधमरू साँपक फुफकार- शब्द संख्या: 2196, तिथि: 12 अक्टूबर 2018
776. यादास्त- शब्द संख्या: 1870, तिथि: 15 अक्टूबर 2018
777. हमर मेला चोरि भS गेल- शब्द संख्या: 2062, तिथि: 19 अक्टूबर 2018
778. गरदैन हलैल गेल- शब्द संख्या: 1922, तिथि: 23 अक्टूबर 2018
779. दिवालीक दीप- शब्द संख्या: 2422, तिथि: 29 अक्टूबर 2018
780. हारि केना मानब- शब्द संख्या: 2054, तिथि: 02 नवम्बर 2018
781. अप्पन गाम- शब्द संख्या: 1940, तिथि: 06 नवम्बर 2018
782. परिछन- शब्द संख्या: 2661, तिथि: 11 नवम्बर 2018
783. झूठ सपना- शब्द संख्या: 2062, तिथि: 15 नवम्बर 2018
784. जिनगीक अन्तिम फल- शब्द संख्या: 2530, तिथि: 19 नवम्बर 2018

785. चरणबाबूक टैक्सी- शब्द संख्या: 2381, तिथि: 24 नवम्बर 2018
786. पुस्तकालय- शब्द संख्या: 2333, तिथि: 29 नवम्बर 2018
787. विचारभेद- शब्द संख्या: 2553, तिथि: 04 दिसम्बर 2018
788. एकरवा बानर- शब्द संख्या: 2793, तिथि: 09 दिसम्बर 2018
789. फकीरबा स्थान- शब्द संख्या: 2759, तिथि: 14 दिसम्बर 2018
790. रंगमे भंग- शब्द संख्या: 2237, तिथि: 20 दिसम्बर 2018
791. खिलतोड़ भूमि- शब्द संख्या: 2590, तिथि: 17 जनवरी 2019
792. बैगनक बगान बनरा गेल, तूँ मुँह तकै छह- श. 2590, ति. 22 जनवरी 2019
793. मटरक अजोह दाना- शब्द संख्या: 3473, तिथि: 03 फरवरी 2019
794. फुइसिक रग्गड़- शब्द संख्या: 2225, तिथि: 07 फरवरी 2019
795. उखमज- शब्द संख्या: 3964, तिथि: 16 फरवरी 2019
796. एकभग्गू बेटा- शब्द संख्या: 2286, तिथि: 19 फरवरी 2019
797. अगुताइ भेल- शब्द संख्या: 1054, तिथि: 22 फरवरी 2019
798. थैंक्यू पापा- शब्द संख्या: 965, तिथि: 24 फरवरी 2019
799. किसुनपुराक हाट- शब्द संख्या: 995, तिथि: 25 फरवरी 2019
800. धनखेतीक बैगन- शब्द संख्या: 1051, तिथि: 28 फरवरी 2019
801. चितवनक शिकार- शब्द संख्या: 1071, तिथि: 02 मार्च 2019
802. बुढ़ भेलौं तँ दुइर गेलौं- शब्द संख्या: 1086, तिथि: 04 मार्च 2019
803. धुआ साड़ी- शब्द संख्या: 1132, तिथि: 06 मार्च 2019
804. राजरोग- शब्द संख्या: 1274, तिथि: 10 मार्च 2019
805. संकल्प- शब्द संख्या: 1520, तिथि: 12 मार्च 2019
806. एकटा नमहर दुख मेटा गेल- शब्द संख्या: 1349, तिथि: 15 मार्च 2019
807. काजक मोल- शब्द संख्या: 1090, तिथि: 16 मार्च 2019
808. एतए बसव कठिन अछि- शब्द संख्या: 1010, तिथि: 19 मार्च 2019
809. स्वनिर्मित जिनगी- शब्द संख्या: 1091, तिथि: 22 मार्च 2019
810. कपटलालक मृत्यु- शब्द संख्या: 987, तिथि: 25 मार्च 2019
811. गामक ढहल समाज- शब्द संख्या: 966, तिथि: 27 मार्च 2019
812. लजगर लोक- शब्द संख्या: 1003, तिथि: 29 मार्च 2019
813. खरिहाँन उपैट गेल- शब्द संख्या: 1218, तिथि: 02 अप्रैल 2019

814. पगलपन- शब्द संख्या: 1113, तिथि: 04 अप्रैल 2019

815. छलाननक सराध- शब्द संख्या: 996, तिथि: 06 अप्रैल 2019

816. छाती बज्जर केलौं- शब्द संख्या: 1402, तिथि: 08 अप्रैल 2019

817. नाँहकमे दोख- शब्द संख्या: 1463, तिथि: 16 अप्रैल 2019

818. सग्गा पिऔज- शब्द संख्या: 1530, तिथि: 20 अप्रैल 2019

819. गाछसँ नमहर फड़- शब्द संख्या: 1003, तिथि: 22 अप्रैल 2019

820. जिनगीमे जान आएल- शब्द संख्या: 1198, तिथि: 25 अप्रैल 2019

821. जे संग नइ औत ओकरा संग नइ जेबै- श.सं.: 1080, ति.: 26 अप्रैल 2019

822. चौरस खेतक चौरस उपज- शब्द संख्या: 998, तिथि: 29 अप्रैल 2019

823. सिकिया नेता- शब्द संख्या: 1023, तिथि: मजदूर दिवस, 2019

824. मुँह खुजिते नाक कटि गेल- शब्द संख्या: 1475, तिथि: 04 मई 2019

825. जेकरे भर तेकरे डर- शब्द संख्या: 1214, तिथि: 06 मई 2019

826. ललियाएल चेहरा करियाएल मन- शब्द संख्या: 1194, तिथि: 09 मई 2019

827. पुरुखक भर- शब्द संख्या: 1109, तिथि: 12 मई 2019

828. भकमोड़मे पड़ि गेलौं- शब्द संख्या: 1411, तिथि: 15 मई 2019

829. अपन इमान मरि गेल- शब्द संख्या: 1071, तिथि: 17 मई 2019

830. गामक रूप बदैल देब- शब्द संख्या: 1004, तिथि: 19 मई 2019

831. कुभेला- शब्द संख्या: 992, तिथि: 21 मई 2019

832. देखौंस- शब्द संख्या: 945, तिथि: 23 मई 2019

833. समयसँ पहिने चेत किसान- शब्द संख्या: 1326, तिथि: 25 मई 2019

834. काजक मेहपन- शब्द संख्या: 947, तिथि: 27 मई 2019

835. पनरह किलोक कदीमा- शब्द संख्या: 941, तिथि: 29 मई 2019

836. फेर नढ़रो बेल तर जेती- शब्द संख्या: 1553, तिथि: 01 जून 2019

837. काजक धुनि- शब्द संख्या: 1065, तिथि: 03 जून 2019

838. सोरहामे सुर्रा लगि गेल- शब्द संख्या: 1618, तिथि: 06 जून 2019

839. अगराही- शब्द संख्या: 944, तिथि: 08 जून 2019

840. जेकरे-ले चोरि केलौं सएह कहैए चोरा- श.सं.: 1556, तिथि: 11 जून 2019

841. भौक- शब्द संख्या: 1403, तिथि: 14 जून 2019

842. मनतरक पावर- शब्द संख्या: 1598, तिथि: 17 जून 2019

843. हाल-चाल- शब्द संख्या: 1519, तिथि: 20 जून 2019
844. अधमरु साँपक डँस- शब्द संख्या: 1525, तिथि: 23 जून 2019
845. के मानत?- शब्द संख्या: 1721, तिथि: 29 जून 2019
846. दियादीक फेड़- शब्द संख्या: 1412, तिथि: 03 जुलाई 2019
847. वाह रे आदत- शब्द संख्या: 1455, तिथि: 06 जुलाई 2019
848. कटबी सुइद- शब्द संख्या: 1435, तिथि: 09 जुलाई 2019
849. तिलकौआ छत्ता- शब्द संख्या: 1948, तिथि: 13 जुलाई 2019
850. अपने जिनगी भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1539, तिथि: 16 जुलाई 2019
851. कलेश- शब्द संख्या: 1509, तिथि: 20 जुलाई 2019
852. गामक आशा टुटि गेल- शब्द संख्या: 2338, तिथि: 24 जुलाई 2019
853. आब इज्जत नइ बँचत- शब्द संख्या: 2046, तिथि: 28 जुलाई 2019
854. अँगनाक बीरार- शब्द संख्या: 1856, तिथि: 31 जुलाई 2019
855. भेँट-घाँट- शब्द संख्या: 1884, तिथि: 03 अगस्त 2019
856. कोसा- शब्द संख्या: 1999, तिथि: 07 अगस्त 2019
857. दहेजक गाए- शब्द संख्या: 2076, तिथि: 15 अगस्त 2019
858. चलती- शब्द संख्या: 1770, तिथि: 18 अगस्त 2019
859. तीन बुड़िवान- शब्द संख्या: 1901, तिथि: 21 अगस्त 2019
860. एकाधिकारी जाति- शब्द संख्या: 2198, तिथि: 24 अगस्त 2019
861. अपन करखन्ना- शब्द संख्या: 1704, तिथि: 28 अगस्त 2019
862. लड़कपन- शब्द संख्या: 2150, तिथि: 03 अक्टूबर 2019
863. कुदृष्टि- शब्द संख्या: 2435, तिथि: 08 अक्टूबर 2019
864. हकार- शब्द संख्या: 2012, तिथि: 16 अक्टूबर 2019
865. दलखिच्चड़मे घी- शब्द संख्या: 2286, तिथि: 25 अक्टूबर 2019
866. दोहरी दहार- शब्द संख्या: 2154, तिथि: 02 नवम्बर 2019
867. पसेनाक मोल- शब्द संख्या: 1748, तिथि: 06 नवम्बर 2019
868. बुढ़ापा- शब्द संख्या: 2122, तिथि: 10 नवम्बर 2019
869. पुरना घराड़ी- शब्द संख्या: 2092, तिथि: 14 नवम्बर 2019
870. जगरनथिया भोज- शब्द संख्या: 2416, तिथि: 18 नवम्बर 2019
871. कृषियोग- शब्द संख्या- शब्द संख्या: 2010, तिथि: 22 नवम्बर 2019

872. काजक रोप- शब्द संख्या: 2679, तिथि: 21 दिसम्बर 2019
873. खटसमाद- शब्द संख्या: 2909, तिथि: 27 दिसम्बर 2019
874. जीबठपन- शब्द संख्या: 2577, तिथि: 02 जनवरी 2020
875. गोटी लाल- शब्द संख्या: 2364, तिथि: 06 जनवरी 2020
876. अपनाकेँ चिन्हैत चलिहह- शब्द संख्या: 2361, तिथि: 11 जनवरी 2020
877. दहेज- शब्द संख्या: 2431, तिथि: 15 जनवरी 2020
878. जेहेन मति तेहेन गति- शब्द संख्या: 2630, तिथि: 21 जनवरी 2020
879. केते लग केते दूर- शब्द संख्या: 2660, तिथि: 31 जनवरी 2020
880. अपन कर्तव्य आकि उपकार- शब्द संख्या: 2410, तिथि: 05 फरवरी 2020
881. जिनगी भौर भेलह हेन- शब्द संख्या: 2789, तिथि: 10 फरवरी 2020
882. वसन्त पंचमी- शब्द संख्या: 2767, तिथि: 16 फरवरी 2020
883. चुटका सुतरल- शब्द संख्या: 2445, तिथि: 21 फरवरी 2020
884. हारल चेहरा जीतल रूप- शब्द संख्या: 2255, तिथि: 25 फरवरी 2020
885. अग्नि परीछा- शब्द संख्या: 3097, तिथि: 01 मार्च 2020
886. आसीरवचन- शब्द संख्या: 2564, तिथि: 06 मार्च 2020
887. दहिबरी- शब्द संख्या: 2560, तिथि: 12 मार्च 2020
888. सघन बन- शब्द संख्या: 2697, तिथि: 17 मार्च 2020
889. हुसैत लोक- शब्द संख्या: 2602, तिथि: 23 मार्च 2020
890. हुसि गेलौं- शब्द संख्या: 2574, तिथि: 28 मार्च 2020
891. झूठक झालि- शब्द संख्या: 2352, तिथि: 01 अप्रैल 2020
892. दुष्टपन- शब्द संख्या: 2317, तिथि: 06 अप्रैल 2020
893. रहै जोकर परिवार- शब्द संख्या: 2297, तिथि: 15 अप्रैल 2020
894. परिपक्व निरलज- शब्द संख्या: 2232, तिथि: 20 अप्रैल 2020
895. अप्पन काज अपने चिन्हू- शब्द संख्या: 2278, तिथि: 24 अप्रैल 2020
896. लजाउ काज- शब्द संख्या: 2394, तिथि: 02 मई 2020
897. सुचिता- एक: शब्द संख्या: 4352, तिथि: 30 मई 2020
898. सुचिता- दू: शब्द संख्या: 4459, तिथि: 08 जून 2020
899. सुचिता- तीन: शब्द संख्या: 4672, तिथि: 15 जून 2020
900. सुचिता- चारि: शब्द संख्या: 4022, तिथि: 02 जुलाई 2020

901. सुचिता- पाँच: शब्द संख्या: 2757, तिथि: 08 जुलाई 2020
902. सुचिता- छह: शब्द संख्या: 3188, तिथि: 14 जुलाई 2020
903. सुचिता- सात: शब्द संख्या: 4483, तिथि: 24 जुलाई 2020
904. सीमावद्ध जीवन- शब्द संख्या: 2420, तिथि: 01 अगस्त 2020
905. कर्ताक रंग कर्मक संग- शब्द संख्या: 2757, तिथि: 06 अगस्त 2020
906. जिनगीक हिसाब- शब्द संख्या: 2711, तिथि: 11 अगस्त 2020
907. अपना जनैत- शब्द संख्या: 2881, तिथि: 16 अगस्त 2020
908. सुदृढ़ जिनगी- शब्द संख्या: 3460, तिथि: 23 अगस्त 2020
908. मुराम जगह- शब्द संख्या: 3575, तिथि: 31 अगस्त 2020
909. गामक सूरत बदैल गेल: शब्द संख्या: 3340, तिथि: 07 सितम्बर 2020
910. दोसर रस्ता नहि- शब्द संख्या: 2808, तिथि: 13 सितम्बर 2020
911. विचारधाराक भथान- शब्द संख्या: 2659, तिथि: 19 सितम्बर 2020
912. परिवार बिलैट गेल- शब्द संख्या: 3132, तिथि: 26 सितम्बर 2020
913. अनचोकक इजोत- शब्द संख्या: 3339, तिथि: 03 अक्टूबर 2020
914. केलहा सभ पानिमे गेल- शब्द संख्या: 3199, तिथि: 09 अक्टूबर 2020
915. पएर तरक धरती डोलि गेल- शब्द संख्या: 2346, तिथि: 15 अक्टूबर 2020
916. जबुरिया कागज- शब्द संख्या: 3366, तिथि: 22 अक्टूबर 2020
917. बेटाक बिआह- शब्द संख्या: 3734, तिथि: 30 अक्टूबर 2020
918. जीवनमे जान आएल- शब्द संख्या: 3325, तिथि: 06 नवम्बर 2020
919. पोसलाक फल- शब्द संख्या: 3039, तिथि: 12 नवम्बर 2020
920. अन्तिम परीक्षा- शब्द संख्या: 2933, तिथि: 18 नवम्बर 2020
921. गाम आब ओ गाम रहल! - शब्द संख्या: 3038, तिथि: 24 नवम्बर 2020
922. जिनकर जीत तिनकर माला- शब्द सं.: 3025, तिथि: 30 नवम्बर 2020
923. नवका लोक: शब्द संख्या- 3215, तिथि: 06 दिसम्बर 2020
924. काजक उत्तर काज- शब्द संख्या: 3366, तिथि: 12 दिसम्बर 2020
925. घरक खर्च- शब्द संख्या: 3731, तिथि: 19 दिसम्बर 2020
926. समाजक भागे- शब्द संख्या: 3338, तिथि: 25 दिसम्बर 2020
927. बाबा हाथक कोदारि हल्लुक- शब्द संख्या: 4091, तिथि: 02 जनवरी 2021
928. परिवारक विघटन- शब्द संख्या: 2143, तिथि: 07 जनवरी 2021

929. हारल विचार- शब्द संख्या: 3657, तिथि: 14 जनवरी 2021
930. मोड़पर- एक: शब्द संख्या: 4422, तिथि: 25 जनवरी 2021
931. मोड़पर- दू: शब्द संख्या: 3734, तिथि: 01 फरवरी 2021
932. मोड़पर- तीन: शब्द संख्या: 3157, तिथि: 08 फरवरी 2021
933. मोड़पर- चारि: शब्द संख्या: 4844, तिथि: 19 फरवरी 2021
934. मोड़पर- पाँच: शब्द संख्या: 6382, तिथि: 06 मार्च 2021
935. मोड़पर- छह: शब्द संख्या: 2150, तिथि: 10 मार्च 2021
936. मोड़पर- सात: शब्द संख्या: 788, तिथि: 11 मार्च 2021
937. मोड़पर- आठ: शब्द संख्या: 927, तिथि: 12 मार्च 2021
938. मोड़पर- नअ: शब्द संख्या: 1127, तिथि: 14 मार्च 2021
939. मोड़पर- दस: शब्द संख्या: 585, तिथि: 15 मार्च 2021
940. मोड़पर- एगारह: शब्द संख्या: 265, तिथि: 16 मार्च 2021
941. संकल्प- एक: शब्द संख्या: 2988, तिथि: 25 मार्च 2021
942. संकल्प- दू: शब्द संख्या: 1903, तिथि: 29 मार्च 2021
943. संकल्प- तीन: शब्द संख्या: 3101, तिथि: 04 अप्रैल 2021
944. संकल्प- चारि: शब्द संख्या: 3197, तिथि: 10 अप्रैल 2021
945. संकल्प- पाँच: शब्द संख्या: 3202, तिथि: 17 अप्रैल 2021
946. संकल्प- छह: शब्द संख्या: 2026, तिथि: 21 अप्रैल 2021
947. संकल्प- सात: शब्द संख्या: 3139, तिथि: 29 अप्रैल 2021
948. संकल्प- आठ: शब्द संख्या: 2440, तिथि: 04 मई 2021
949. संकल्प- नअ: शब्द संख्या: 2368, तिथि: 08 मई 2021
950. संकल्प- दस: शब्द संख्या: 3977, तिथि: 15 मई 2021
951. अन्तिम क्षण- एक: शब्द संख्या: 2874, तिथि: 20 मई 2021
952. अन्तिम क्षण- दू: शब्द संख्या: 6126, तिथि: 04 जून 2021
953. अन्तिम क्षण- तीन: शब्द संख्या: 3669, तिथि: 12 जून 2021
954. अन्तिम क्षण- चारि: शब्द संख्या: 5817, तिथि: 24 जून 2021
955. अन्तिम क्षण- पाँच: शब्द संख्या: 4916, तिथि: 04 जुलाई 2021
956. परिवारे गजपटा गेल: शब्द संख्या: 1881, तिथि: 09 जुलाई 2021
957. समयक थपेड़मे- शब्द संख्या: 1798, तिथि: 14 जुलाई 2021

958. की सत्त की फुइस?- शब्द संख्या: 1793, तिथि: 17 जुलाई 2021
959. कुभाँज समयक भाँजमे- शब्द संख्या: 1671, तिथि: 21 जुलाई 2021
960. देखल गाम- शब्द संख्या: 1737, तिथि: 25 जुलाई 2021
961. अपना ले- शब्द संख्या: 1903, तिथि: 03 अगस्त 2021
962. तीन धक्का- शब्द संख्या: 1759, तिथि: 06 अगस्त 2021
963. अजीब खेल- शब्द संख्या: 2362, तिथि: 20 अगस्त 2021
964. नीक ठकान ठकेलौं- शब्द संख्या: 2798, तिथि: 25 अगस्त 2021
965. केकरो भरोस- शब्द संख्या: 2237, तिथि: 31 अगस्त 2021
966. बाड़ी भेल धनहर- शब्द संख्या: 1820, तिथि: 04 सितम्बर 2021
967. कुण्ठा- एक: शब्द संख्या: 2284, तिथि: 15 सितम्बर 2021
968. कुण्ठा- दू: शब्द संख्या: 2150, तिथि: 23 सितम्बर 2021
969. कुण्ठा- तीन: शब्द संख्या: 1324, तिथि: 29 सितम्बर 2021
970. कुण्ठा- चारि: शब्द संख्या: 4458, तिथि: 10 अक्टूबर 2021
971. कुण्ठा- पाँच: शब्द संख्या: 2673, तिथि: 18 अक्टूबर 2021
972. कुण्ठा- छह: शब्द संख्या: 2852, तिथि: 24 अक्टूबर 2021
973. कुण्ठा- सात: शब्द संख्या: 1901, तिथि: 18 अक्टूबर 2021
974. कुण्ठा- आठ: शब्द संख्या: 1948, तिथि: 01 नवम्बर 2021
975. कुण्ठा- नअ: शब्द संख्या: 1901, तिथि: 05 नवम्बर 2021
976. कुण्ठा- दस: शब्द संख्या: 2022, तिथि: 09 नवम्बर 2021
977. सुदृढ़ जीवन- शब्द संख्या: 2587, तिथि: 14 नवम्बर 2021
978. सागवानक बागवानी- शब्द संख्या: 2369, तिथि: 05 दिसम्बर 2021
979. बिनु खुट्टाक गाए- शब्द संख्या: 2191, तिथि: 10 दिसम्बर 2021
980. जीवनक कर्म जीवनक मर्म- शब्द संख्या: 2893, तिथि: 16 दिसम्बर 2021
981. घरैया मूस- शब्द संख्या: 2791, तिथि: 22 दिसम्बर 2021
982. टुटि कS खसि पड़लैन- शब्द संख्या: 2182, तिथि: 29 दिसम्बर 2021
983. मृत्युसजियापर पड़ल विवेक बाबा- शब्द सं.: 2294, ति.: 03 जनवरी 2022
984. संचरण- शब्द संख्या: 2477, तिथि: 08 जनवरी 2022
985. जिनगीसँ प्रेम- शब्द संख्या: 2278, तिथि: 14 जनवरी 2022
986. परिवारे बगैद गेल- शब्द संख्या: 2299, तिथि: 21 फरवरी 2022

987. जिनगी पिछैड़ गेल- शब्द संख्या: 2859, तिथि: 02 मार्च 2022
988. श्रमहीन- शब्द संख्या: 3105, तिथि: 08 मार्च 2022
989. समुद्रलंघन- शब्द संख्या: 3274, तिथि: 21 मार्च 2022
990. परिवारक भार- शब्द संख्या: 2402, तिथि: 28 मार्च 2022
991. हीन-हीनाइत विवेक- शब्द संख्या: 2347, तिथि: 02 अप्रैल 2022
992. चेहराक निखार- शब्द संख्या: 2496, तिथि: 06 अप्रैल 2022
993. भरि मन काज- शब्द संख्या: 2281, तिथि: 12 अप्रैल 2022
994. विचारे मरि गेल- शब्द संख्या: 2302, तिथि: 21 अप्रैल 2022
995. मृत्युक भय मेटा गेल- शब्द संख्या: 2536, तिथि: 26 अप्रैल 2022
996. घरक बात- शब्द संख्या: 2686, तिथि: 01 मई (मजदूर दिवस) 2022
997. अप्पन दलान- शब्द संख्या: 2480, तिथि: 06 मई 2022
998. कंजूसपन- शब्द संख्या: 2589, तिथि: 11 मई 2022
999. आएल आशा चलि गेल- शब्द संख्या: 1478, तिथि: 15 मई 2022
1000. अकारण- शब्द संख्या: 1918, तिथि: 18 मई 2022
1001. अछोप- शब्द संख्या: 1590, तिथि: 21 मई 2022
1002. अप्पन बेइमानी- शब्द संख्या: 1560, तिथि: 24 मई 2022
1003. उनटन- शब्द संख्या: 1581, तिथि: 24 मई 2022
1004. अर्द्धांगिनी- शब्द संख्या: 1511, तिथि: 30 मई 2022
995. बहवाँइर- शब्द संख्या: 1538, तिथि: 04 जून 2022
1006. पाक मास्टर- शब्द संख्या: 1387, तिथि: 07 जून 2022
1007. साइंस टीचर- शब्द संख्या: 1301, तिथि: 10 जून 2022
1008. इज्जत लऽ लेलक- शब्द संख्या: 1367, तिथि: 13 जून 2022
1009. निसगर पान- शब्द संख्या: 1346, तिथि: 15 जून 2022
1010. विरोध- शब्द संख्या: 1452, तिथि: 19 जून 2022
1011. जीवन दान- शब्द संख्या: 1405, तिथि: 26 जून 2022
1012. बाग-बगिया- शब्द संख्या: 1272, तिथि: 30 जून 2022
1013. विश्वास पात्र- शब्द संख्या: 1374, तिथि: 02 जुलाई 2022
1014. विचारक टिटकारी- शब्द संख्या: 1335, तिथि: 05 जुलाई 2022
1015. लत- शब्द संख्या: 1375, तिथि: 08 जुलाई 2022

1016. जीवन खटाइमे पड़ि गेल- शब्द संख्या: 1220, तिथि: 11 जुलाई 2022
1017. कर्ज- शब्द संख्या: 1256, तिथि: 13 जुलाई 2022
1018. बहादुरी- शब्द संख्या: 1268, तिथि: 16 जुलाई 2022
1019. हमरो खगता छै- शब्द संख्या: 1178, तिथि: 20 जुलाई 2022
1020. सपना- शब्द संख्या: 1241, तिथि: 23 जुलाई 2022
1021. संगे-संग एलौं संगिया मरि गेल हम भुतिआइ छी- श.: 1303, 26.7.2022
1022. उवाणि- शब्द संख्या: 1264, तिथि: 29 जुलाई 2022
1023. विचारक प्रबलता- शब्द संख्या: 1268, तिथि: 01 अगस्त 2022
1024. अपन रचित रचना- शब्द संख्या: 1481, तिथि: 07 अगस्त 2022
1025. थाहल संगी- शब्द संख्या: 1331, तिथि: 10 अगस्त 2022
1026. आत्मबल- शब्द संख्या: 1267, तिथि: 13 अगस्त 2022
1027. विश्वासहीन- शब्द संख्या: 1405, तिथि: 16 अगस्त 2022
1028. बुलन्दी- शब्द संख्या: 1329, तिथि: 19 अगस्त 2022
1029. अप्पन साती- शब्द संख्या: 1287, तिथि: 22 अगस्त 2022
1030. खिच्चड़ि- शब्द संख्या: 1624, तिथि: 26 अगस्त 2022
1031. भंगतराह कवि- शब्द संख्या: 1364, तिथि: 01 सितम्बर 2022
1032. भंगतराह कवि- शब्द संख्या: 1357, तिथि: 01 सितम्बर 2022
1033. कनियेँ-मनियेँ पूँजी- शब्द संख्या: 1315, तिथि: शिक्षक दिवस 2022
1034. पुरुखढौह- शब्द संख्या: 1263, तिथि: 08 सितम्बर 2022
1035. सिमानक झगड़ा- शब्द संख्या: 1232, तिथि: 13 सितम्बर 2022
1036. जिनगी भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1312, तिथि: 16 सितम्बर 2022
1037. परिवारक योग- शब्द संख्या: 1295, तिथि: 19 सितम्बर 2022
1038. मनुक्ख खौक- शब्द संख्या: 1183, तिथि: 25 सितम्बर 2022
1039. साहित्यकारक विवेक- शब्द संख्या: 1141, तिथि: 28 सितम्बर 2022
1040. भाषाक बेथा- शब्द संख्या: 1231, तिथि: 01 अक्टूबर 2022
1041. बुझबे ने केलिऐ- शब्द संख्या: 1227, तिथि: 05 अक्टूबर 2022
1042. जीवनक सम्बन्ध- शब्द संख्या: 1187, तिथि: 08 अक्टूबर 2022
1043. गैंचाह लोक- शब्द संख्या: 1113, तिथि: 11 अक्टूबर 2022
1044. जिनगीकेँ पटैक भगलौं- शब्द संख्या: 1258, तिथि: 14 अक्टूबर 2022

1045. अन्तिम आशा- शब्द संख्या: 1365, तिथि: 17 अक्टूबर 2022
1046. गजपट मारि- शब्द संख्या: 1327, तिथि: 20 अक्टूबर 2022
1047. कन्हजोड़- शब्द संख्या: 1346, तिथि: 23 अक्टूबर 2022
1048. अनहोनी- शब्द संख्या: 1308, तिथि: 26 अक्टूबर 2022
1049. होनी- शब्द संख्या: 1236, तिथि: 29 अक्टूबर 2022
1050. भवितव्य- शब्द संख्या: 1130, तिथि: 02 नवम्बर 2022
1051. ओसचट बीमारी: शब्द संख्या: 1260, तिथि: 05 नवम्बर 2022
1052. पुत्र परीक्षा: शब्द संख्या: 1286, तिथि: 09 नवम्बर 2022
1053. अप्पन मन बुझाएब- शब्द संख्या: 1294, तिथि: 12 नवम्बर 2022
1054. जड़ौर- शब्द संख्या: 1304, तिथि: 15 नवम्बर 2022
1055. अलोपित- शब्द संख्या: 1360, तिथि: 18 नवम्बर 2022
1046. कुमहरक बतिया- शब्द संख्या: 1240, तिथि: 21 नवम्बर 2022
1057. सिमानक आड़ि- शब्द संख्या: 1289, तिथि: 26 नवम्बर 2022
1058. नब बनक नब फल- शब्द संख्या: 1412, तिथि: 30 नवम्बर 2022
1059. सुमारक- शब्द संख्या: 1246, तिथि: 04 दिसम्बर 2022
1060. अन्तिम भेँट- शब्द संख्या: 1277, तिथि: 08 दिसम्बर 2022
1061. अनहरिया- शब्द संख्या: 1356, तिथि: 12 दिसम्बर 2022
1062. निरन्तर- शब्द संख्या: 3025, तिथि: 21 दिसम्बर 2022
1063. शॉर्टकट रास्ता- शब्द संख्या: 1620, तिथि: 26 दिसम्बर 2022
1064. अपेछा टुटि गेल- शब्द संख्या: 1739, तिथि: 30 दिसम्बर 2022
1065. सुनयना बेटी: 01- शब्द संख्या: 1728, तिथि: 05 जनवरी 2023
1066. सुनयना बेटी: 02- शब्द संख्या: 3540, तिथि: 14 जनवरी 2023
1067. सुनयना बेटी: 03- शब्द संख्या: 3722, तिथि: 25 जनवरी 2023
1068. सुनयना बेटी: 04- शब्द संख्या: 1987, तिथि: 30 जनवरी 2023
1069. सुनयना बेटी: 05- शब्द संख्या: 3802, तिथि: 06 फरवरी 2023
1070. सुनयना बेटी: 06- शब्द संख्या: 1821, तिथि: 10 फरवरी 2023
1071. सुनयना बेटी: 07- शब्द संख्या: 925, तिथि: 12 फरवरी 2023
1072. सुनयना बेटी: 08- शब्द संख्या: 2999, तिथि: 18 फरवरी 2023
1073. सुनयना बेटी: 19- शब्द संख्या: 1926, तिथि: 22 फरवरी 2023

1074. सुनयना बेटी: 10- शब्द संख्या: 1953, तिथि: 26 फरवरी 2023
1075. आब नइ जीब- शब्द संख्या: 2097, तिथि: 2 मार्च 2023
1076. सेहन्ता सेहन्ते रहि गेल- शब्द संख्या: 2013, तिथि: 06 मार्च 2023
1077. धुरफन्ना लोक- शब्द संख्या: 1891, तिथि: 10 मार्च 2023
1078. घरदेखी- शब्द संख्या: 1846, तिथि: 14 मार्च 2023
1079. बासभूमि- शब्द संख्या: 2639, तिथि: 31 मार्च 2023
1080. इज्जत पर पड़ि गेल- शब्द संख्या: 2698, तिथि: 07 अप्रैल 2023
1081. अहीं जीतलौं- शब्द संख्या: 2884, तिथि: 13 अप्रैल 2023
1082. गामसँ गाए उपैट गेल- शब्द संख्या: 2454, तिथि: 20 अप्रैल 2023
1083. भारक बड़बड़िया- शब्द संख्या: 1727, तिथि: 24 अप्रैल 2023
1084. रूपैँ बदैल गेल- शब्द संख्या: 1736, तिथि: 28 अप्रैल 2023
1085. वंशक धर्म- शब्द संख्या: 1881, तिथि: 02 मई 2023
1086. उपराग- शब्द संख्या: 1358, तिथि: 05 मई 2023
1087. केकरा भगाउ आ केकरा बसाउ- शब्द संख्या: 1390, तिथि: 08 मई 2023
1088. खीरा लत्तीमे रोजगार- शब्द संख्या: 1377, तिथि: 11 मई 2023
1089. टकुआटान- शब्द संख्या: 2302, तिथि: 19 मई 2023
1090. पोस्टमार्टम- शब्द संख्या: 1852, तिथि: 23 मई 2023
1091. ऐ सालक नाह बुड़ि गेल- शब्द संख्या: 1761, तिथि: 27 मई 2023
1092. सामंजस्य- शब्द संख्या: 1868, तिथि: 01 जून 2023
1093. महींसवारक गाम- शब्द संख्या: 1337, तिथि: 04 जून 2023
1094. दसअना छहअना- शब्द संख्या: 1243, तिथि: 07 जून 2023
1095. वाह रे हम- शब्द संख्या: 1291, तिथि: 10 जून 2023
1096. एक जूम तमाकुल- शब्द संख्या: 1290, तिथि: 13 जून 2023
1097. चपरासी गाम- शब्द संख्या: 1201, तिथि: 17 जून 2023
1098. बनरफाँस- शब्द संख्या: 1279, तिथि: 19 जून 2023
1099. हँस्सा ठक- शब्द संख्या: 1889, तिथि: 26 जून 2023
1100. विश्वासू मन- शब्द संख्या: 1724, तिथि: 30 जून 2023
1101. चोरनी पिल्ली- शब्द संख्या: 1883, तिथि: 04 जुलाई 2023
1102. गामक जमीने पथरा गेल- शब्द संख्या: 1837, तिथि: 08 जुलाई 2023

1103. एकलव्यपन- शब्द संख्या: 2087, तिथि: 14 जुलाई 2023
1104. केलहा साफल- शब्द संख्या: 2102, तिथि: 19 जुलाई 2023
1105. त्रिशुलपर लटकल गाम- शब्द संख्या: 2007, तिथि: 23 जुलाई 2023
1106. त्रिशंकु गाम- शब्द संख्या: 2151, तिथि: 28 जुलाई 2023
1107. चारिम कनियाँ- शब्द संख्या: 1995, तिथि: 01 अगस्त 2023
1108. वंश नाश- शब्द संख्या: 1988, तिथि: 06 अगस्त 2023
1109. लोक लाज- शब्द संख्या: 1781, तिथि: 10 अगस्त 2023
1110. धानक कमठौन- शब्द संख्या: 1580, तिथि: 30 अगस्त 2023
1111. एक चुटकी खुशी- शब्द संख्या: 2053, तिथि: 02 सितम्बर 2023
1112. अनका सिर- शब्द संख्या: 1801, तिथि: शिक्षक दिसव 2023
1113. समयक फेड़- शब्द संख्या: 1531, तिथि: 08 सितम्बर 2023
1114. कोढ़ि- शब्द संख्या: 1511, तिथि: 11 सितम्बर 2023
1115. मुहाँ-ठुठ्ठी- शब्द संख्या: 1167, तिथि: 13 सितम्बर 2023
1116. औनाकऽ मरए लगलौं- शब्द संख्या: 1060, तिथि: 13 सितम्बर 2023
1117. जेहेन आँखि तेहेन पाँखि- शब्द संख्या: 1077, तिथि: 17 सितम्बर 2023
1118. चौरचनक केरा- शब्द संख्या: 1185, तिथि: 19 सितम्बर 2023
1119. सुख-दुख- शब्द संख्या: 1708, तिथि: 04 अक्टूबर 2023
1120. दुख-सुख- शब्द संख्या: 1629, तिथि: 07 अक्टूबर 2023
1121. जीवन की आ जीवनक उद्देश्य की- श. सं.: 1571, ति.: 10 अक्टूबर 2023
1122. अंधविश्वास- शब्द संख्या: 1509, तिथि: 13 अक्टूबर 2023
1123. बखेरिया लोक- शब्द संख्या: 1528, तिथि: 16 अक्टूबर 2023
1124. नव जीवन- शब्द संख्या: 1620, तिथि: 19 अक्टूबर 2023
1125. प्रीति- शब्द संख्या: 1610, तिथि: 19 अक्टूबर 2023
1126. पुरुषार्थ- शब्द संख्या: 1667, तिथि: 25 अक्टूबर 2023
1127. मन टँगि गेल- शब्द संख्या: 1702, तिथि: 28 अक्टूबर 2023
1128. नियति आ पुरुषार्थ- शब्द संख्या: 1714, तिथि: 31 अक्टूबर 2023
1129. जे ननू से गर्भहि ननू- शब्द संख्या: 1639, तिथि: 03 नवम्बर 2023
1130. पुरुखक डीह- शब्द संख्या: 1666, तिथि: 06 नवम्बर 2023
1131. पाशापर- शब्द संख्या: 1707, तिथि: 09 नवम्बर 2023

1132. संचरण- शब्द संख्या: 1743, तिथि: 14 नवम्बर 2023

1133. कंजूस- शब्द संख्या: 1636, तिथि: 17 नवम्बर 2023

1134. बाबाक पौती- शब्द संख्या: 1640, तिथि: 20 नवम्बर 2023

1135. भँसिया गेलौं- शब्द संख्या: 1614, तिथि: 23 नवम्बर 2023

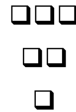
1136. उबारि देलौं- शब्द संख्या: 1645, तिथि: 28 नवम्बर 2023

1137. श्रद्धा- शब्द संख्या: 1619, तिथि: 01 दिसम्बर 2023

1138. केकरोपर आश्रित- शब्द संख्या: 1641, तिथि: 04 दिसम्बर 2023

1139. समैया लुच्चा- शब्द संख्या: 1735, तिथि: 07 दिसम्बर 2023

1140. उकडू समयमे सुकडू काज: जारी...



<u>Notes</u>

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....